सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सेन्ट पंचवटी

सितंबर 2022

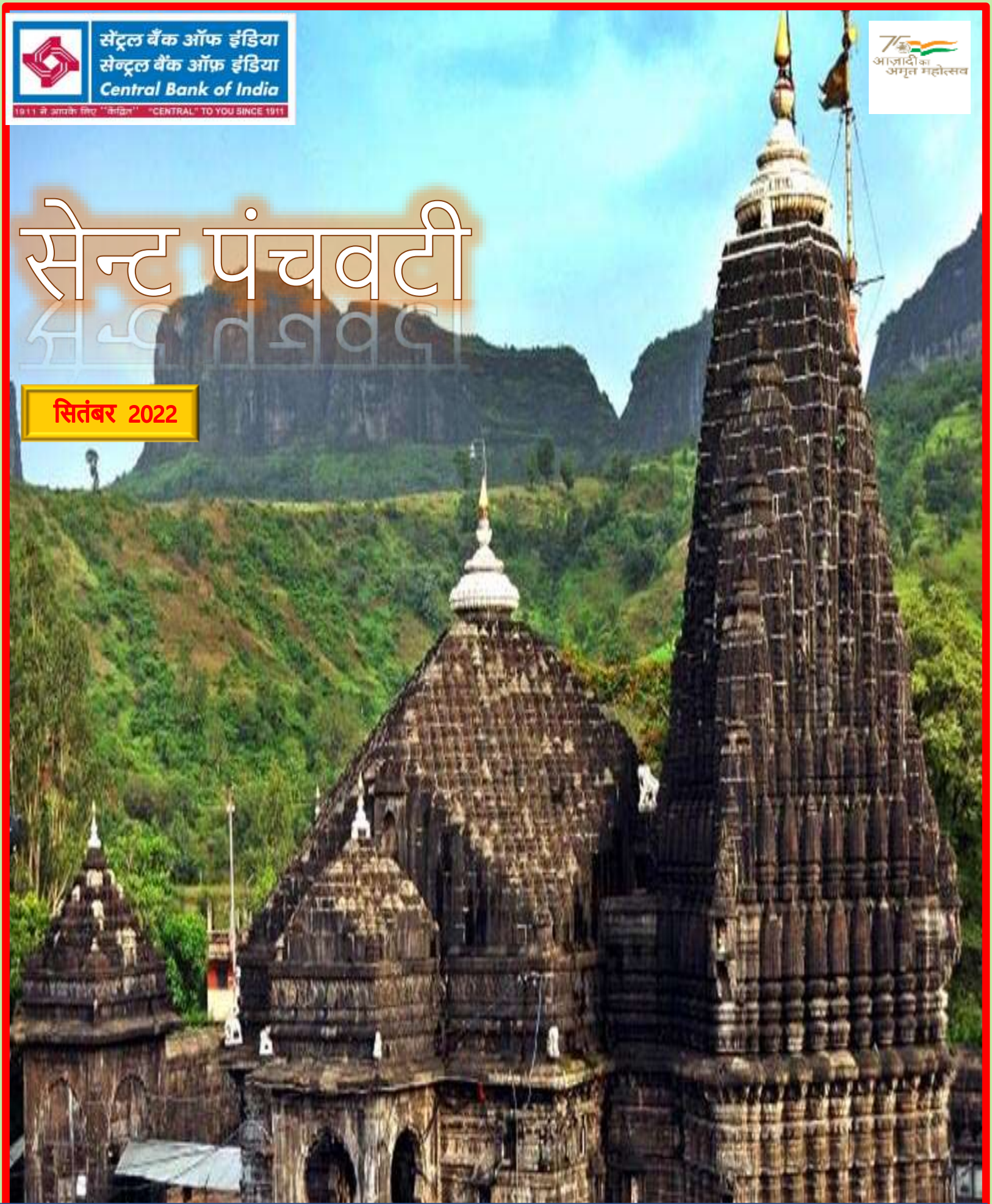

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक की छमाही ई-पत्रिका

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रिल" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेन्ट पंचवटी

विषय सूची

क्षेत्रीय प्रमुख का संदेश	3
मुख पृष्ठ: त्र्यंबकेश्वर मंदिर	4
भारतीय जनचेतना के कवि : रामधारी सिंह दिनकर	8
मेरी परछाई : कविता	10
भारतीय सिनेमा के पितामह : दादासाहेब फालके	11
प्रबंधन में निर्णय का महत्व	16
ग्रामीण बैंकिंग	19
ग्राहकों के अधिकार	21
महाराष्ट्र की कला : वारली चित्रकला	23
चित्र दीर्घा	28
बैंकिंग प्रबंधन	36
श्रीखंड	40
प्रेरक कथा	41
हंसी की फुहार	42

संरक्षक

श्री रंजीत सिंह
क्षेत्रीय प्रमुख

मार्गदर्शन

श्री डेनिस कुटीन्हो
मुख्य प्रबन्धक

श्री चन्दन झा
मुख्य प्रबन्धक

विशेष मार्गदर्शन

श्री राजीव तिवारी

मुख्य प्रबन्धक – राजभाषा
आंचलिक कार्यालय पुणे

संपादक
महेशकुमार आहेर
सहायक प्रबन्धक – राजभाषा

संपर्क

****

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय,
पी – 63, सातपूर एमआईडीसी,
नासिक – 422007
ई-मेल : hindinasiro@centralbank.co.in

पत्रिका में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने हैं, इनसे बैंक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं।

क्षेत्रीय प्रमुख का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

सबसे पहले आप सभी को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। हमारे नासिक क्षेत्र की छमाही ई-पत्रिका 'सेन्ट पंचवटी' का सितंबर 2022 का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष है। ऐसे समय में जब सूचना और प्रोद्योगिकी के अभूतपूर्व विकास के फलस्वरूप संचार एवं संवाद के नए माध्यमों का आविर्भाव हुआ है, इस पत्रिका का प्रकाशन संतोष देने योग्य है। ऐसा मेरा विश्वास है कि पत्रिका के नियमित प्रकाशन से न केवल पठन- पाठन की प्रवृत्ति विकसित होगी अपितु राजभाषा की स्वीकार्यता भी बढ़ेगी।

इस दौरान हमारे सेन्ट्रलाइट परिवार के लिए पी.सी.ए. से बाहर आने के रूप में जो सुखद प्रगति हुई है, इससे हम सभी एक नई ऊर्जा और आशा से ओत-प्रोत हैं। हमारे लिए यह आवश्यक है कि इस ऊर्जा को अपनी प्रिय संस्था को आगे बढ़ाने में परिणत करें। हमारे लिए यह अवसर नवीन शुरुआत है, यात्रा तो हमें शिखर तक की करनी है।

" पाताल होकर ही पथ जाता नभ का "

आइये उपरोक्त पंक्ति को अपने हृदय में संजो कर पूरी निष्ठा एवं पवित्रता के साथ आरोहण की यात्रा प्रारम्भ करते हैं। मेरी यह कामना है कि पवित्र गोदावरी के उद्गम स्थल से नूतन सकारात्मकता का भाव प्रस्फुटित हो जो सभी पाठकों को अपने आगोश में ले सके।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागभवेत् ॥

इसी कामना के साथ यह अंक आप सभी को अर्पित करते हैं। साथ ही उन सभी का आभार जिन्होने अपनी रचनात्मकता से इस पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाया है।

शुभकानाओं सहित

रंजीत सिंह
क्षेत्रीय प्रमुख

त्र्यंबकेश्वर मंदीर

- श्री महेशकुमार आहेर
राजभाषा अधिकारी

महाराष्ट्र के नासिक शहर से करीब 35 किलोमीटर की दूरी पर गौतमी नदी के किनारे स्थित त्र्यंबकेश्वर मंदिर हिन्दुओं के पवित्र और प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में से एक हैं।
यह भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिगों में 10वें नंबर पर आता है। भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर अपनी भव्यता और आर्कषण की वजह से पूरे भारतदेश एव विदेश में भी प्रसिद्ध है।
त्रयंबकेश्वर में विराजित ज्योर्तिलिंग की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों एक ही रुप में विराजित हैं।
भगवान शिव के इस सबसे प्राचीन मंदिर से लाखों लोगों की आस्था जुड़ी हुई है। आइए जानते हैं इस मंदिर के इतिहास और निर्माण से जुड़ी कई मान्यताएं और प्रचलित कथाओं के बारे में-

त्र्यंबकेश्वर मंदिर का धार्मिक महत्व

त्र्यंबकेश्वर मंदिर के बारे धार्मिक ग्रन्थों में बताया गया है कि एक बार त्र्यंबक में बहुत वर्षों तक बारिश नहीं हुयी। जिसके कारण यहाँ से लोग पलायन करने लगे। इस समस्या के समाधान के लिए महर्षि गौतम जी ने छः माह का कठोर तप करके भगवान वरुण देव जी

को प्रसन्न किया। भगवान वरुण देव ने महर्षि गौतम से एक गड्ढा खोदने को कहा और उस गड्ढे को दिव्य जल से भर दिया। जिसके कारण वहाँ फिर से हरियाली आ गयी और सभी मनुष्य फिर से वापस अपने घरों में आने लगे, और सभी लोग महर्षि गौतम की प्रशंसा करने लगे। एक बार महर्षि गौतम के शिष्य उस गड्ढे से जल भरने गये। उसी समय दूसरे ऋषि-मुनियों कि पत्नियाँ भी वहाँ आ गयी और पहले जल भरने का हठ

करने लगी। ये सब देख गुरुमाता अहिल्या वहाँ आई और उन औरतों से कहा कि ये बालक पहले से यहाँ आए हैं तो पहले यही लोग जल भरेंगे।

उन ऋषि पत्नियों को लगा कि इस जल की व्यवस्था इनके पति ने की है इसलिए यह ऐसा बोल रही हैं। उन्होने घर जाकर अपने पतियों से इस बात को बड़ा चड़ा कर बोल दिया। इस बात से नाराज उन ऋषियों ने गौतम ऋषि से बदला लेने के लिए भगवान गणेश जी की पुजा करने लगे। जब भगवान गणेश जी प्रकट हुए तो उन ऋषियों ने गौतम ऋषि को अपमानित करने के लिए उनकी सहायता करने के लिए कहा। उनकी बात सुनकर भगवान गणेश जी ने उन ऋषियों से कहा कि ऐसे ऋषि मुनि से द्वेष रखना गलत है जिसने अपने तप से जल कि व्यवस्था कर यहाँ के लोगों को जीवनदान दिया हो। लेकिन उन ऋषियों के हठ के कारण उनकी बात मान ली। और उन ऋषियों को चेतावनी भी दी कि इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा।

कुछ दिन बाद गणेश जी एक दुर्बल गाय बन कर महर्षि गौतम के खेत में पहुँच गये, जहां महर्षि गौतम खेत में धान काट रहे थे। गाय को देख कर महर्षि गौतम ने उसे अपने पास बुलाया और कुछ धान के तिनके खाने के लिए दिये उन तिनकों का स्पर्श होते ही गाय खेत में गिर गयी और कुछ समय पश्चात उसकी मौत हो गयी। यह सब देख वह दुष्ट ऋषि और उनकी पत्नियाँ उनके पास आई और उन पर गौ हत्या का पाप लगाने लगे उनसे कहने लगे कि जब तक तुम यहाँ रहोगे तब तक अग्नि देव और पित्र गण हमारे हवन को ग्रहण नहीं करेंगे। इसलिए तुम अपने परिवार सहित यहाँ से कहीं दूर चले जाओ। उनकी बात मानकर गौतम ऋषि त्र्यंबक से दूर एक कुटिया बनाकर रहने लगे। परंतु वह दुष्ट ऋषि-मुनि यहाँ भी उनको परेशान करने लगे और उनको हवन करने से भी रोकने लगे।

यह सब देख कर महर्षि गौतम ऋषि उन सबसे प्रार्थना करने लगे कि उन्हे बताएं वह इस पाप से कैसे मुक्त हो सकते हैं ? तब उन ऋषियों ने महर्षि गौतम से कहा कि तुम माँ गंगा को यहाँ ला कर उनके जल से स्नान करो और एक करोड़ शिव लिंग बनाकर महादेव की आराधना करो, और फिर गंगा में स्नान कर इग्यारह बार ब्रह्मगिरी पर्वत की परिक्रमा करो। यह सब करने के बाद फिर सौ घड़े पानी से इन शिव लिंगों को नहलाने से ही तुम्हारा कल्याण होगा। उनकी बात मानकर महर्षि गौतम ने वही सब किया जो उन

ऋषियों ने कहा था। उनकी तपस्या देखकर भगवान शिव ने उनको दर्शन दिये और वर मांगने को कहा, महर्षि गौतम ने निष्पाप होने का वर मांगा। तब भगवान शिव ने कहा कि हे मुनिवर तुम सदा से ही निष्पाप हो इन दुष्टों ने तुम्हारे साथ छल किया है इनका कभी उद्धार नहीं होगा। भगवान शिव की बात सुन कर महर्षि गौतम आश्चर्य-चकित हुये।

उन्होने महादेव से कहा, हे महादेव अगर आप मुझ पर प्रसन्न हो तो मुझे माँ गंगा को प्रदान कीजिये। उनकी बात सुन कर भगवान शिव जी माँ गंगा को पुनः धरती में अवतरित होने को कहा। तब माँ गंगा ने कहा मैं यहाँ तभी वास करूंगी जब भगवान शिव अपने परिवार के साथ यहाँ ज्योतिर्लिंग के रूप में निवास करेंगे। भगवान शिव ने माँ गंगा की बात मानकर यहाँ त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में निवास करने लगे।

त्र्यंबकेश्वर मंदिर का इतिहास

प्राचीन समय में बने त्र्यंबकेश्वर मंदिर का पुनः निर्माण तीसरे पेशवा बाला साहेब अर्थात नाना साहेब पेशवा ने करवाया था। इस मंदिर का जीर्णोद्धार सन 1755 ईस्वी से लेकर सन 1786 ईस्वी के बीच हुआ। तब से यह मंदिर अपने वर्तमान स्वरूप में बना हुआ है। प्राचीन तथ्यों के अनुसार इस मंदिर के निर्माण में लगभग सोलह लाख रूपये खर्च किये गये थे।

त्र्यंबकेश्वर मंदिर की वास्तुकला

त्र्यंबकेश्वर मंदिर का निर्माण सिंधु आरी शैली के अनुसार किया गया है। इस मंदिर के अंदर स्थित गर्भ गृह में त्रिमुखी शिवलिंग है। जिसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है। यह मंदिर गोदावरी नदी के तट पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण काले पत्थरों से किया गया है। इस मंदिर परिसर के बीच में एक कुंड है जिसे कुशावर्धक कहते हैं। इस मंदिर में बने शिवलिंग में महाभारत काल के दौरान पांडवों ने एक रत्न जड़ित मकुट चढ़ाया था। यह मंदिर तीन पर्वतों के बीच में बसा हुआ है। जिस कारण इसे त्र्यंबकेश्वर मंदिर कहा जाता है।

त्र्यंबकेश्वर मंदिर खुलने का समय

त्र्यंबकेश्वर मंदिर सप्ताह के सभी दिन खुले रहता है। त्र्यंबकेश्वर मंदिर का खुलने और बंद होने का समय नीचे दिया गया है-

समय	कार्यक्रम
सुबह 5:00 बजे	मंदिर खुलने का समय।
सुबह 5:00 से 6:00 बजे	आरती का समय।
सुबह 6:00 से 7:00 बजे	जलाभिषेक/रुद्राभिषेक का समय।
सुबह 7:00 से 2:00 बजे	दर्शन का समय।
दोपहर 3:00 बजे से शाम 9:00 बजे	दर्शन का समय।
रात्रि 9:30 बजे	मंदिर बंद होने का समय।

ऊपर दिया गया समय त्योहार के दिनों में बदल सकता है। भक्तों को सुबह के समय शिव लिंग को छूने की अनुमति होती है। सुबह 6:00 से 7:00 बजे तक जलाभिषेक और रुद्राभिषेक पूजा के लिए भक्त मुख्य देवता को छू सकते हैं।

त्र्यंबकेश्वर मंदिर में कैसे पहुँचें?

त्र्यंबकेश्वर मंदिर हवाई मार्ग से पहुँचने के लिए सबसे निकटतम मुंबई हवाई अड्डा है। जो मंदिर से 178 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जहां से आप टैक्सी के माध्यम से पहुँच सकते हो।

ट्रेन द्वारा त्र्यंबकेश्वर मंदिर में पहुँचने के लिए नासिक रेलवे स्टेशन सिर्फ 37 किलोमीटर की दूरी पर है। जहां से आप टैक्सी के माध्यम से पहुँच सकते हो।

सड़क द्वारा त्र्यंबकेश्वर मंदिर के लिये नागपुर, मुंबई, पुणे आदि से बस सेवा उपलब्ध है, अन्यथा यात्री अपनी पसंद के अनुसार कार या टैक्सी किराए पर लेने के लिए स्वतंत्र हैं।

जन्मदिवस विशेष

भारतीय जनचेतना के कवि : रामधारी सिंह दिनकर

श्री रंजीत सिंह
क्षेत्रीय प्रमुख, नासिक क्षेत्र

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर उन चुनिंदा कवियों में हैं जो आम जनमानस के हृदय में स्थान रखते हैं और जिनकी रचनाएँ हमारे मानस-पटल पर विद्यमान रहती हैं। इनकी यही विशेषता इनकी लोकप्रियता का कारक है। सबसे बड़ी बात है कि इनकी रचनाओं का दायरा किताब के पन्नों तक सीमित नहीं रहता और समाज के विचारों और भावनाओं का प्रचंडता से अतिक्रमण करता है।

दिनकर की कृतियाँ उनके व्यक्तित्व को सहजता से उजागर करती हैं। वे शासन-तंत्र का भाग होते हुए भी मौन रहकर सत्ता-सुख भोगने के बजाए उसकी कमियों विसंगतियों पर प्रहार करते हैं। उनका नायक कोई राजपुत्र नहीं वरन् समाज में अपने दम पर स्वयं को स्थापित करने वाला वह व्यक्ति है जो सभी बाधाओं को अपनी योग्यता से परास्त करता है। वह जातिगत भेदभाव भी नहीं करते, वे योग्यता और मेधा के वशीभूत हैं। उनके लिए भोग विलास से अधिक त्याग का महात्म्य है। वे हर उस व्यक्ति की आवाज हैं जिनके साथ समाज निष्ठुर हुआ है। रश्मिरथी की निम्न पंक्तियाँ उनकी इस विशेषता की परिचायक हैं

" जय हो जग में जले जहाँ भी,
नमन पुनीत अनल को।
जिस नर में भी बसे,
हमारा नमन तेज को, बल को।
नहीं फूलते कुसुम मात्र
राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे
पुर से दूर कुंज-कानन में।
वन में प्रसून तो खिलते हैं
बागों में शाल न मिलते हैं।
प्रासादों के कनकाभ शिखर
होते कबूतरों के ही घर
महलों मे गरूर न होता है
कंचन पर कभी न सोता है।"

"सिंहासन खाली करो कि जनता आती है"

" समर अभी शेष है, पाप का भागी नहीं केवल ब्याध,

जो हैं तटस्थ समय लिखेगा उनके भी अपराध"

"मत रोको युधिष्ठिर को यहाँ

जाने दो उनको स्वर्ग धीर,

पर लौटा दो मुझको गांडीव-गदा

अर्जुन भीम वीर "

दिनकर पुरुषत्व की बात करते हैं। वे युद्ध का घोष करते हैं पर उसमें कभी भी उन्माद का बोध नहीं होता। वे आत्मरक्षार्थ युद्ध और शक्ति के प्रयोग का घोर आवाह्न करते हैं और स्वाभिमान की रक्षा के लिए मर मिटने की बात करते हैं। वे कुरूक्षेत्र में भी व्यंग्य का असर नहीं जाने देते और कर्ण के मुख से भगवान कृष्ण पर शब्द रूपी बाण इस प्रकार छुड़वाते हैं जिसमें श्रद्धा के साथ व्यंग्य का भी प्रहार होता है-

" छीनता हो स्वत्व कोई और तू त्याग तप से काम ले

यह पाप है

पुण्य है विछिन्न कर देना उसे

बढ़ रहा जो तेरी तरफ हाथ है।

विजय दिलवाइये केशव स्वजन को

और पार्थ

शिथिल कर किंचित भी मन को

हो अभय बेधता जा अंग अरि का

द्विधा क्या जब संग है हरि का।"

एक ओर जहाँ दिनकर जी वीर रस के कवि माने जाते हैं, दूसरी ओर बच्चों के लिए "चांद का कुर्ता" लिख जाते हैं। पर उनकी वह कृति,जिसके लिए उन्हे ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया, उनकी छवि के विपरित पुरूष और स्त्री के प्रेम की पराकाष्ठा "उर्वशी" रही। दिनकर ने स्वयं ही स्वीकार किया है कि "उर्वशी" महाकाव्य लगभग 8-9 वर्षों के विश्राम के बाद आयी और इस दौरान उन्होंने कोई कविता नहीं लिखी। यह सिद्ध करता है कि प्रेम वीरों का ही भूषण होता है। उर्वशी में एक ओर पुरुरवा और उर्वशी के प्रेम क्रीड़ा को कुशलतापूर्वक श्रृंगारबद्ध करते हैं तो दूसरी ओर पुरुरवा के अंतर्द्वंद्व को भी उजागर करते हैं। यह भी दर्शाते हैं कि यह प्रेम की ही महिमा है जो भूलोक को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ करती है जिसके आकर्षण में बंध कर अप्सरा भी समस्त दैवीय सुखों का परित्याग कर मृत्युलोक का चयन करती है। इतना ही नहीं, यहां भी वे पुरुरवा की पत्नी के साथ हुए अन्याय का जिक्र किए बिना नहीं रहते।

" चाहिए देवत्व, पर इस आग को धर दूं कहाँ पर

कामनाओं को विसर्जित व्योम में कर दूं कहाँ पर।"

" मुझे भ्रांति थी, जो कुछ था मेरा सब कुछ चढ़ा चुकी हूं,

शेष नहीं अब कोई भी पूजा प्रसून डाली में

पर हाय प्रियतम को जिसकी सबसे अधिक तृषा थी

अब लगता है चूक गई मैं वही सुरभि देने से।"

दिनकर जी की रचनाओं और व्यक्तित्व पर लिखना मुझ जैसे अज्ञानी के लिए धृष्टता ही है, पर एक साहित्य प्रेमी और उनका अनुरागी होने के नाते आज उनके जन्म दिवस पर मेरी यह श्रद्धांजलि है।

मेरी परछाई....

श्रीमती प्रीति पटवर्धन
वरिष्ठ प्रबन्धक, आईटी

आज कल मेरी मुलाकत मेरी परछाई से बहुत कम होती है
सही है क्योंकि दिन की शुरुवात उजालो से नहीं होती
चाँद का साथ बना रहता है युहीं चलते हुए..
कभी आधा तो कभी पूरा चाँद साथ होता है
लालिमा सूरज की मुस्कराते हुए धीरे धीरे आती है ..
अंधेरो से उजालो की और दिन की शुरुवात होती है..
कहीं में नींद में अलसायी सी एक नज़र देखती हूँ
थोड़ी ही देर में उषा की किरणों को अपने साथ पाती हूँ
होले से मुझे छुति हुई , एक हलकी सी तपिश दे जाती है ..
समय जैसे कहीं ठहर नहीं गया ..
कहीं पहर दो पहर का अहसास नहीं रहा..
वापसी दहलीज़ पे घर की मनो जैसे
दो पहर में ही साँझ हो जाती है
संध्या काल में ही निशा घर में प्रवेश कर जाती है
मुझे थोड़ी देर के लिए अपना अहसास कराती है..
कुछ पहर बाद बस कुछ ही पहर बाद
एक नयी भोर फिर से मेरे कानो में बुद्बुदाती है ..
और अंधेरो में ही नए दिन की शुरुवात होने का अहसास कराती है..
और इसी तरह ..
आज कल मेरी मुलाकात मेरी परछाइयों से बहुत कम हो पाती है..

भारतीय सिनेमा के पितामह : दादा साहब फालके

श्री सचिन डोके
वरिष्ठ प्रबन्धक क्षे का नासिक

भारत में मनोरंजन के साधनो का अपना एक अलग ही महत्व है. प्राचीन काल से ही जब मानव ने समुदाय या कबीलों के रूप में रहना शुरू किया तभी से उसने अपने मनोरंजन के लिए साधन भी विकसित किए हैं। प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन आखेट, कथा-कहानी, आपबीती, तैराकी, घुड़सवारी, पर्यटन, चौसर, खेला तमाशे, प्रदर्शन आदि थे। मनोरंजन के अधिकांश रूपों ने संस्कृति, प्रोद्दोगिकी और फेशन में बदलाव के कारण अधिका समय तक विकास किया है। मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण पहलू दर्शक है, जो एक निजी मनोरंजन अथवा अवकाश गतिविधि को मनोरंजन में बदल देता है। पहले युद्ध में उपयोग होने वाली तलवार बाजी, तीरंदाजी, भाला फेक आदि जैसी यूद्ध कलाएं वर्तमान में बीतते समय के साथ-साथ मनोरंजन के साधन भी अद्यतन होते जा रहे है। वर्तमान समय में मनोरंजन हम सब के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इन्ही मनोरंजन के साधनों में भारतीयों का सबसे ज्यादा पसंदीदा साधन है – सिनेमा।

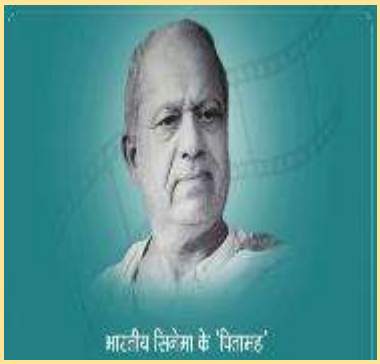

भारत में सिनेमा का आना एक संयोग मात्र है। भारत में सिनेमा पहली बार फ्रेंच नागरिक लुमिएर बंधुओं द्वारा 7 जुलाई 1896 को में वॉटसन होटल, मुंबई (तत्कालीन बॉम्बे) में दिखाया गया। लुमिएर बंधु सिनेमटोग्राफर थे। उस दिन लुमिएर बंधुओं द्वारा कुल 6 फिल्मे दिखाई गई। एक फिल्म का टिकट उस समय 1 रूपया रखा गया था। इसके बावजूद इस फिल्म प्रदर्शन को काफी अच्छी प्रतिक्रिया मिली। दी टाईम्स ऑफ इंडिया द्वारा इस आयोजन को " मिरेकल ऑफ दी सेन्च्युरी" कहकर संबोधित किया गया था। लुमिएर बंधुओं द्वारा जो 6 फिल्मे दिखाई गई वो थी : दी सी बाथ, अराईव्हल ऑफ दी ट्रेन, ए डिमोलिशन, लेडीज एंड सोल्जर ऑन व्हील तथा लिविंग दी फैक्टरी। यह सभी फिल्मे लुमिएर बंधुओं द्वारा उन्ही के द्वारा ईजाद किए गए "सिनेमाइटोग्राफ़" की सहायता से चित्रित की गई थी।

लुमिएर बंधुओं के द्वारा वॉटसन होटल में किए गए इस फील्म प्रदर्शन से भारतीय छायाचित्रकार हरिश्चंद्र सखाराम भतावडेकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होने तुरंत लंडन से फिल्म कैमरा तथा प्रोजेक्टर प्राप्त किया। सभी उन्हे सवे काका के नाम से भी जानते थे। वे फोटोग्राफी के साथ साथ फोटोग्राफी उपकरणों का व्यवसाय भी करते थे। उनके द्वारा बनाई गई "दी रेसलर" भारत की पहली फील्म है, यह आज के चलचित्र की तरह नही थी। बहुत सारे छायाचित्रों को एकत्रित कर यह फील्म बनाई गई थी। इसे भारत की प्रथम डॉक्यूमेंटरी फील्म भी कहा जाता है।

सही अर्थ भारतीय फील्म की शुरूआत 1913 में हुई। सन् 1910 में दादा साहेब फालके को ईसा मसीह पर बनी फील्म "लाइफ ऑफ क्राइस्ट" देखने का मौक़ा मिला। वह मूक फ़िल्मों का ज़माना था। दादा

साहेब ने फ़िल्म को देखकर सोचा कि ऐसी फ़िल्में हमें अपने देश के महापुरुषों के जीवन पर भी बनानी चाहिए। यही से उनके जीवन का लक्ष्य बदल गया। फील्म निर्माण के आरम्भिक प्रयोग करने के बाद वे लंदन गए और वहाँ पर दो महीने रहकर सिनेमा की तकनीक समझी और फ़िल्म निर्माण का सामान लेकर भारत लौटे। भारत लोटकर उन्होने 1912 में 'मुंबई के ददार परिसर में 'दादा साहेब फालके फ़िल्म' नाम से अपनी फ़िल्म कम्पनी की स्थापना की। दादासाहेब फालके का पूरा नाम " धुंड़ीराज गोविंद फालके था लेकिन उन्हे दादा साहेब दादा साहेब फालके के नाम से ज्यादा जाना जाता है। उन्हे भारतीय फेल्म जगत का पितामह भी कहा जाता है। दादा साहेब दादा साहेब फालके का पूरा नाम 'धुन्दीराज गोविंद दादा साहेब फालके' था किंतु वह दादा साहेब दादा साहेब फालके के नाम से प्रसिद्ध हैं। दादा साहेब दादा साहेब फालके का जन्म 30 अप्रैल, 1870 को नासिक के निकट 'त्र्यंबकेश्वर' गाँव में हुआ था। उनके पिता संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे तथा मुम्बई के 'एलफिंस्टन कॉलेज' के अध्यापक थे। इस कारण उनकी शिक्षा मुंबई में ही हुई। हाईस्कूल की शिक्षा के बाद उन्होने 'जे.जे. स्कूल ऑफ़ आर्ट' में कला की शिक्षा प्राप्त की।

शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होने कुछ समय तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग में काम किया। उसके पश्चात उन्होंने अपना प्रिटिंग प्रेस खोला। प्रेस के लिए नई मशीनें ख़रीदने के लिए वे जर्मनी भी गए। परन्तु इस सबसे दादा साहेब फालके संतुष्ट नाही थे। दादा साहेब फालके के जीवन में फ़िल्म निर्माण से जुड़ा रचनात्मक मोड़ सन 1910 'लाईफ़ आफ़ क्राईस्ट' फ़िल्म को देखने के बाद आया, उन्होंने यह फ़िल्म दिसंबर के आस-पास 'वाटसन' होटल में देखी। वह फ़िल्म अनुभव से बहुत प्रभावित हुए और इसके बाद उस समय की और भी अन्य फ़िल्मों को उन्होने देखा। वे सिनेमा के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए फिल्मों पर अत्यधिक शोध करने लगे। इस क्रम में उन्हें आराम का कम समय मिला, निरंतर फ़िल्म देखने, अध्ययन और खोज से दादा साहेब फालके बीमार पड गए। बीमार पड़ने के बावजूद भी

उन्होंने अपने प्रयोग जारी रखते हुए 'मटर के पौधे' के विकास कालक्रम का छायांकन कर फ़िल्म बना दी। कालांतर में इन अनुभवों को फ़िल्म निर्माण में लगाया। फ़िल्म बनाने की मूल प्रेरणा दादा साहेब फालके को 'क्राईस्ट का जीवन' देखने मिली, फ़िल्म को देखकर उनके मन में विचार आया कि क्या भारत में भी इस तर्ज़ पर फ़िल्म बनाई जा सकती हैं? फ़िल्म कला को अपना कर उन्होंने प्रश्न का ठोस उत्तर दिया। उस समय फ़िल्म क्षेत्र विदेशी उद्योग था और फ़िल्म बनाने के लिए आवश्यक तकनीक उस समय भारत में उपलब्ध नहीं थी, दादा साहेब फालके सिनेमा के ज़रूरी उपकरण लाने के लिए लंदन गए। लंदन में उनकी मुलाकात जाने-माने निर्माता और 'बाईस्कोप' पत्रिका के सम्पादक सेसिल हेपवोर्थ से हुई, कहा जाता है कि दादा साहेब फालके को फ़िल्म सामग्री ख़रीदने के लिए सेसिल हेपवोर्थ ने ही मार्गदर्शन किया।

भारतीय सिनेमा के पितामह

धुन्दीराज गोविंद फालके (दादा साहेब फालके) ने फ़िल्म निर्माण, निर्देशन, पटकथा लेखन आदि विविध क्षेत्रों में भारतीय सिनेमा को अपना योगदान दिया था। उन्हें भारतीय सिनेमा का जनक कहा जाता है। दादा साहेब फालके ने अपने अनुभवों द्वारा 1913 में भारत की प्रथम मू फील्म "राजा हरिश्चंद्र" बनाई

थी। उन्होने 3 मई 1913 को मुंबई के 'कोरोनेशन थिएटर' में अपनी पहली मूक फ़िल्म दर्शकों को दिखाई थी। 20 वर्षों में उन्होंने कुल 95 फ़िल्में और 26 लघु फ़िल्में बनाई। दादा साहेब दादा साहेब फालके के फ़िल्म निर्माण की ख़ास बात यह है कि उन्होंने अपनी फ़िल्में मुम्बई के बजाय नासिक में बनाई। वर्ष 1913 में उनकी फ़िल्म 'भस्मासुर मोहिनी' में पहली बार महिलाओं, दुर्गा गोखले और कमला गोखले, ने महिला किरदार निभाया। इससे पहले पुरुष ही महिला किरदार निभाते थे। 1917 तक वे 23 फ़िल्में बना चुके थे। उनकी इस सफलता से कुछ व्यवसायी इस उद्योग की ओर आकृष्ट हुए और दादा साहेब की साझेदारी में 'हिन्दुस्तान सिनेमा कम्पनी' की स्थापना हुई। दादा साहेब ने कुल 125 फ़िल्मों का निर्माण किया। जिसमें से तीन-चौथाई उन्हीं की लिखी और निर्देशित थीं। दादा साहेब की अंतिम मूक 1932 में चित्रित फ़िल्म 'सेतुबंधन' थी, जिसे बाद में डब करके आवाज़ दी गई। उस समय डब करना भी एक शुरुआती प्रयोग था। दादा साहेब एकमात्र बोलती फ़िल्म "गंगावतरण" नाम की बनाई है।

'हिन्दुस्तान फ़िल्म कंपनी' की स्थापना

राजा हरिश्चंद्र की कामयाबी के बाद दादा साहेब फालके ने नासिक जाने का निर्णय लिया। नासिक में आकर दादा साहेब फालके ने अगली फ़िल्म 'मोहनी भस्मासुर' और 'सावित्री-सत्यवान' का निर्माण किया। इन फ़िल्मों के हिट होने से दादा साहेब फालके लोकप्रिय हुए और उसके पश्चात हर फील्म के 20 प्रिन्ट ज़ारी होने लगे, उस समय की परिस्थितियों में यह एक महान् उपलब्धि थी। इन फ़िल्मों में कुशल तकनीक के रुप में 'स्पेशल इफ़ेक्ट' अर्थात् विशेष प्रभाव का रचनात्मक प्रयोग हुआ। 'विशेष प्रभाव' और 'ट्रीक फ़ोटोग्राफ़ी' के उपयोग की क्रांतिकारी पहल से दर्शक फीलमों की और आकर्षित होने लगे। दादा साहेब फालके तत्कालीन फ़िल्म उपकरणों को लेकर बेहद सजग रहे और सन 1914 में फिर से लंदन गए। लंदन से लौटकर दादा साहेब फालके ने सन 1917 में नासिक में 'हिन्दुस्तान फ़िल्म कंपनी' स्थापित करते हुए अनेक फ़िल्में बनाई। अपने यादगार सफ़र के 25 वर्षों में दादा साहेब ने राजा हरिश्चंद्र (1913), सत्यवान सावित्री (1914), लंका दहन (1917), श्री कृष्ण जन्म (1918), कालिया मर्दन (1919), कंस वध (1920), शकुंतला (1920), संत तुकाराम (1921) और भक्त गोरा (1923) समेत 100 से ज्यादा फ़िल्में बनाई। दादा साहेब फालके के कार्य पद्धति में जार्ज मेलिस का स्पष्ट प्रभाव देखा गया, उनमें दृश्य निर्माण की सुलझी हुई संवेदना के साथ प्रशंसनीय तकनीकी ज्ञान भी था।

प्रमुख फ़िल्में

- राजा हरिश्चंद्र (1913)
- मोहिनी भस्मासुर (1913)
- सावित्री सत्यवान (1914)

- लंका दहन (1917)
- श्री कृष्ण जन्म (1918)
- कालिया मर्दन (1919)
- कंस वध (1920)
- शकुंतला (1920)
- संत तुकाराम (1921)
- भक्त गोरा (1923)
- सेतु बंधन (1932)
- गंगावतरण (1937)

दादा साहब फालके द्वारा जब 1913 में प्रथम मुख फ़िल्म 'राजा हरिश्चंद्र' बनाई गई तब उनके समक्ष बहुत सी कठनाईयां भी निर्माण हुई। भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहेब ने जब भारत की पहली फीचर फ़िल्म बनाने के लिए तैयारी की, तो फ़िल्म की नायिका उनके लिए गंभीर समस्या बन गई। सन् 1913 में बनी फ़िल्म 'राजा हरिश्चंद्र' में 'तारामती' की विशेष भूमिका थी। दादा साहेब फालके की इच्छा थी कि नायिका की भूमिका कोई युवती ही करे। इसके लिए पहले उन्होंने नाटक मंडली से जुड़ी अभिनेत्रियों से बात की, लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि कोई कैमरे के सामने आने को तैयार नहीं हुई। यहां तक कि दादा साहेब ने हिरोइन की खोज के लिए इश्तहार भी बंटवाए, लेकिन उसका भी कोई फ़ायदा नहीं मिला। जब तारामती की भूमिका के लिए अंततः कोई कलाकार नहीं मिला, तो विवश हो दादा साहेब फालके कोठे वालियों के पास पहुंचे। उनसे हिरोइन बनने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने भी टका-सा जवाब दे दिया। हारकर दादा साहेब ने फैसला किया कि किसी पुरुष से ही तारामती की भूमिका कराई जाए और उसी पल से कलाकार की तलाश शुरू हो गई। तभी एक दिन उन्हें एक ईरानी के रेस्तरां में एक रसोइया नजर आया।

उन्होने उस रसोइये से बात की, बहुत कहने-सुनने के बाद वह काम करने के लिए तैयार हो गया, लेकिन दादा साहेब फालके की मुसीबत अभी खत्म नहीं हुई थी। दरअसल, रिहर्सल के बाद जब शूटिंग का समय आया, तो निर्माता निर्देशक दादा साहेब फालके ने रसोइये से कहा - 'कल से शूटिंग करेंगे, तुम अपनी मूंछें साफ़ कराके आना।' दादा की यह बात सुनकर रसोइया, जो हिरोइन का रोल करने वाला था, चौंक गया। उन्होंने जवाब दिया- 'मैं मूंछें कैसे साफ़ करा सकता हूं! मूंछें तो मर्द-मराठा की शान हैं!' रसोइये की बातें सुनकर दादा साहेब फालके ने समझाया, भला मूंछ वाली तारामती कैसे हो सकती है? वह तो नारी है और नारी की कोई मूंछ नहीं होती। फिर मूंछ का क्या है, शूटिंग पूरी होते ही रख लेना! काफ़ी समझाने के बाद रसोइया मूंछ साफ़ कराने के लिए तैयार हुआ।

दादा साहेब फालके पुरस्कार

दादा साहेब फालके शताब्दी वर्ष 1969 में भारतीय सिनेमा की ओर दादा साहेब फालके के अभूतपूर्व योगदान के सम्मान में 'दादा साहेब फालके सम्मान' शुरु हुआ। राष्ट्रीय स्तर का यह सर्वोच्च सिने पुरस्कार सिनेमा में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाता है। उनकी स्मृति में यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दिया जाता है।

अन्तिम समय

सन 1938 में भारतीय सिनेमा ने रजत जयंती पूरी की। इस अवसर पर चंदुलाल शाह और सत्यमूर्ति की अध्यक्षता में सामारोह आयोजित हुआ, इस समारोह में दादा साहेब फालके को बुलाया तो अवश्य गया किन्तु उन्हें कुछ विशेष सम्मान नहीं मिला। समारोह में उपस्थित 'प्रभात फ़िल्मस' के शांताराम ने दादा साहेब फालके की आर्थिक सहायता की पहल करते हुए उस समारोह में उपस्थित निर्माताओं, निर्देशक, वितरकों से धनराशि जमाकर दादा साहेब फालके को भेज दि। इस राशि से दादा साहब फालके ने नासिक में अपने लिए घर बनाया। उनके जीवन के अंतिम दिन यहीं बीते। 16 फ़रवरी, 1944 को नासिक में दादा साहेब फालके' का निधन हुआ।

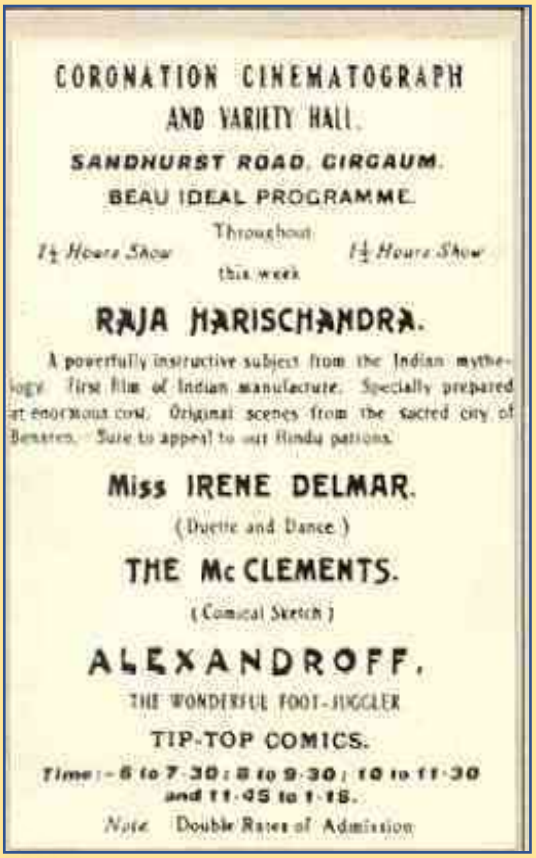

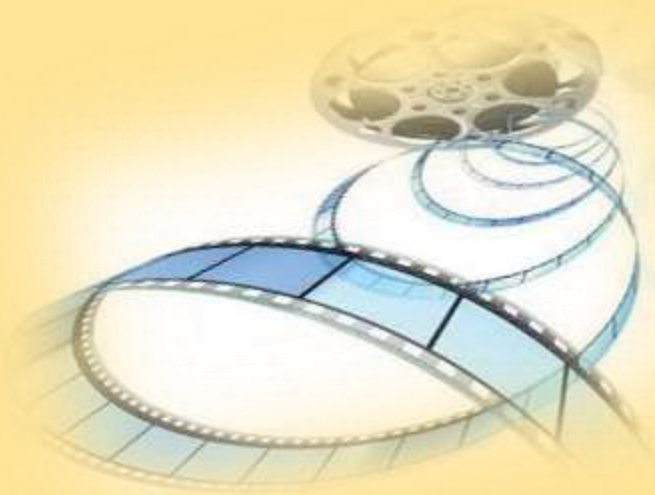

प्रबंधन में निर्णय का महत्व

श्री भावेश जाधव
प्रबन्धक, क्षे का नासिक

एक प्रबंधक की प्रत्येक क्रिया आम तौर पर एक निर्णय का परिणाम होती है।

"एक प्रबंधक जो कुछ भी करता है, वह निर्णय लेने के माध्यम से करता है।" प्रबंधन के कार्य में असंख्य निर्णय लेना अनिवार्य होता है। इसी कारण यह माना जाता है कि निर्णय लेना ही प्रबंधन है। चयन एक वरीयता है जिसमें व्यक्ति दी गई परिस्थितियों/परिदृश्य की समाप्ती चयन को प्राथमिकता देकर करता है। यह व्यवहार अथवा गतिविधी के एक भाग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके द्वारा किसी एक के द्वारा दिन प्रति दिन क्या करना है एवं क्या नाही करना है, इस बात का अनुमान लगाया जाता है। इसलिए चयन करने को गति का एक रूप अथवा गतिविधी के अतिरिक्त अवसर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस कारण से, इसमें अभिलाषा निर्माण करने की अभिरुचि शामिल होती है तथा चयन हमारी गति या गतिविधि की स्थिति को निर्धारित करता है।

निर्णय लेना हमारे जीवन का एक अनिवार्य भाग है। मनुष्य जीवन में कोई भी निर्णय लेते समय असंख्य विकल्पो की सहायता लेता है। उद्यम उपक्रमों में हर स्तर पर विविध निर्णय लिए जाते हैं। सभी प्रबंधकीय कार्य जैसे, नियोजन, आयोजन, स्टाफिंग, निर्देशन, समन्वय और नियंत्रण आदि विविध चयन एवं विकल्पोन के माध्यम से किए जाते हैं। इस कारण निर्णय लेना किसी भी नियोजनकर्ता के प्रबंधन शैली का केंद्र है।

किसी भी संस्था द्वारा निर्णयों को दो मापदंडो के आधारपर वर्गीकृत किया जाता है:

धन का स्तर
- रणनीतिक निर्णय
- कार्यनीतिक निर्णय
- संचालनात्मक निर्णय

र्णय का स्वरूप
- योजनाबद्ध निर्णय
- गैर योजनाबद्ध निर्णय

1. प्रबंधन के स्तर पर आधारित:

हमारे संगठन का प्रबंधन तीन स्तर का है। जिसमे प्रथम स्तर रणनीतिक स्तर (उच्च स्तर), द्वितीय तथा मध्यम स्तर कार्यनीतिक स्तर है एवं तीसरा तथा अंतिम स्तर संचालनात्मक स्तर है।

संस्था का कार्य सूचारु रूप से चलने के लिए संगठन द्वारा तीनों स्तरों पर निर्णय लिया जाता है।

रणनीतिक निर्णय : रणनीतिक निर्णयों का प्रभाव वितरण श्रृंखला के कार्यप्रणाली पर लंबे समय तक रहता है, जिसे लंबे समय के बाद अतिरिक्त संशोधित करना अनिवार्य होता है। यह सामान्यतः 3 अथवा अधिक वर्षों के उपरांत करना आवश्यक होता। यह हर समय श्रृंखला के कॉनफिगरेशन एवं बुनियादी ढांचे के संरचनात्मक निर्णयों को विशेष बनाता है। रणनीतियाँ दिन प्रति दिन स्रोत आवंटित करती है एवं प्रोद्योगिकी दिन प्रति दिन हर कोने से प्रक्रिया को सफल बनाती है। अपने उद्योक के विशाल लक्ष्यों का चित्र प्रस्तुत करने से आपको अपने कार्य संचालन को गतीशील एवं निरंतर रखते हुए अपने इस व्यापक उद्द्यम के साथ अपनी कम अवधि की योजनाओं को दिन प्रति दिन संरेखित करने का अवसर आपको प्राप्त होता। उन्हें आम तौर पर नियंत्रण के सबसे अच्छे स्तरों पर लिया जाता है, जिसमें अनिश्चितताओं की एक विस्तृत विविधता शामिल होती है और खतरे के बेहतर चरण होते हैं।

कार्यनीतिक निर्णय : उक्त निर्णय रणनीतिक निर्णयों के कार्यान्वयन से संबंधित है। विभागीय योजनाओं को विकसित करने, कार्याप्रणाली की संरचना करने, वितरण श्रृंखला स्थापित करने, मानव, सामाग्री एवं पैसा जैसे संसाधनो के प्राप्ति हेतु इन निर्णयों का कार्यान्वयन किया जाता है। यह निर्णय प्रबंधन के मध्यम स्तर द्वारा लिए जाते हैं।

संचालनात्मक निर्णय : इन निर्णयों का संबंध नियोक्ता के प्रतिदिन की गतिविधियों एवं सहभाग से संबंधित है। उक्त निर्णय बार बार लिए जाते है इस कारण इन्हे कम अवधि मिलती है। इन निर्णयों का चयन परिस्थितियों से संबंधित तथ्यों पर आधारित होते है तथा यह निर्णय चयन करने के लिए पूरे संस्था के संगठनात्मक फैसलों की आवश्यकता नही होती है। संचलनात्मक निर्णय कम संख्या में लिए जाते हैं। जैसा कि पर्यवेक्षक को तर्कसंगत एवं योग्य सूचनापूर्ण चयन करने में सांखिकी का सहयोग लेना जरूरी होता हैं, वैसे ही सांखिकी प्रणाली को हर दिन प्रबंधकीय चयन निर्माण प्रक्रिया पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

2. निर्णयों के स्वरूप के आधार पर :

संस्था के लिए कार्य करते हुए हमे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, हर एक समस्या को एक ही रणनीति से हम हल नहीं कर सकते हैं। इस कारण संस्था को इन समस्याओं के स्वरूप को समझकर उसके अनुसार निर्णय लेने की आवश्यकता है।

संस्था के कार्यान्वयन को निर्बाध बनाए रखने के लिए निम्नलिखित दो तरीकों के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं।

योजनाबद्ध निर्णय: योजनाबद्ध निर्णय वे होते हैं जो पूर्व से उपयोग की जा रही तकनीक का अथवा अन्य योग्य रूप से स्पष्ट रणनीतियों का उपयोग करते हैं। यह ऐसी प्रणाली है जो कर्मचारीयों द्वारा समय समय पर अनुपस्थित रहने हेतु किए गए अनुरोध के कारण बनी परिस्थितीयों को संबोधित करती है। ऐसे निर्णयों का चयन संस्था में पुनः पुनः एवं सामान्य आधार पर किए जाते हैं। योजनाबद्ध निर्णयों में वास्तविक चयन प्रबन्धकों द्वारा योजना तैयार करते समय केवल एक ही बार किया जाता हैं। इसके उपरांत यह प्रणाली प्रतिदिन स्वय कार्य की विशेष तकनीक निर्दिष्ट करती है, हालांकी इस तरह की परिस्थियाँ तैयार होती रहती हैं।

इस प्रक्रिया का परिणाम नीतियों की प्रणाली, व्यवस्था एवं नीतियों के भीतर दृष्टीगत होता है।

यह आवश्यक नही है कि योजनाबद्ध किए गए निर्णयों से प्रति दिन सरल समस्याओं पर रोक लगे, जैसे छूट्टी के नियम या इसी प्रकार के मुद्दे शामिल होते हैं। प्रोग्राम किए गए विकल्पों से अब जरूरी नहीं कि हर दिन आसान मुद्दों पर रोक लगी रहें, जिसमें छुट्टी के नियम या इसी तरह की चीजें शामिल हैं; योजनाबद्ध निर्णयों का उपयोग हर दिन बहुत ही जटील समस्याओं का समाधान करने हेतु किया जाता हैं। इसमे प्रतिदिन किए जाने वाले परीक्षण के प्रकार शामिल होते हैं। जैसे डॉक्टर मधुमेह से प्रभावित व्यक्ति पर मुख्य सर्जरी करने से पहले उसके दैनंदिन व्यवहार के बारे में जानने की इच्छा रखते है।

गैर – योजनाबद्ध निर्णय: गैर – योजनाबद्ध निर्णय अनन्य हैं। वे नियमित रूप से अस्थिर, वन शॉट निर्णय हैं। पारंपारिक रूप से इन निर्णयों को अनुमान, सहज प्रवृत्ति एवं सृजनात्मकता से पूर्ण तकनीक के माध्यम से निपटाया गया था। रचनात्मकता से युक्त तकनीकों के माध्यम से निपटाया गया था। वर्तमान में निर्णय लेने वालों ने प्रति दिन के अनुमान से समस्या-निवारण करने के तरीकों को बादल दिया है जिसमे योग्य निर्णय, सामान्य बोध एवं जांच एवं स्खलन का उपयोग दैनंदिन समस्याओं के निपटान हेतु किया जाता है। इसमे दिन-प्रतिदिन बड़ी संख्या में जटील, मात्रात्मक अथवा स्वचालित प्रक्रिया माध्यमों का इस्तेमाल कर समस्याओं को हल किया जा सकता है।

वास्तव में, कई प्रबंधनों के निर्णय लेने के इस्तेमाल किए जाने वाले अध्ययन अनुप्रयोगोन की रचना इस प्रकार की गई है की इसके उपयोग से प्रबन्धक दिन प्रतिदिन तार्किक, गैर-योजनाबद्ध माध्यमों का उपयोग कर समस्याओं को हल कर सकें। इस तरह, वे प्रतिदिन उत्कृष्ट, अप्रत्याशित और लक्षित मुद्दों का सामना कराते हैं। ये विकल्प दिन प्रतिदिन नियमित रूप से तैयार किए जाते है।

निष्कर्ष

प्रबंधन वास्तविक रूप से चयन करने की प्रक्रिया का पैकेज डील है। किसी भी संस्था के प्रबन्धक निर्णय लेने एवं यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होते हैं कि उनके द्वारा लिए गए निर्णय परिभाषित लक्ष्यों या लक्ष्यों के अनुसार पूरे किए जाते हैं। निर्णय लेना किसी भी कार्य के नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका है। चयन करना संभवतः पर्यवेक्षक की गतिविधियों का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। यह योजना बनाने की प्रक्रिया में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जबकि प्रबंधक योजना बनाते हैं, वे कई विषयों पर योजना को निर्धारित करते हैं जैसे कि उनका निर्णय किन लक्ष्यों को प्राप्त करेगा, वे किन स्रोतों का उपयोग कर सकते हैं और हर एक आवश्यक कार्य कौन कौन करेगा।

जबकि कभी कभी तैयार की गई योजनाएँ चूक जाती अथवा गलत हो जाती हैं, ऐसी परिस्थियों में प्रबंधकों को यह तय करना चाहिए कि योजना को ठीक करने के लिए क्या करना चाहिए।

वास्तव में, संपूर्ण नियोजन प्रणाली में प्रबंधकों को निर्णय लेने की स्थितियों की एक श्रृंखला में लगातार शामिल किया जाता है। प्रबंधकीय निर्णयों का प्रथम श्रेणी उनके उपयोग द्वारा बनाई गई योजनाओं की प्रभावशीलता को काफी हद तक प्रभावित करता है।

संगठनात्मक प्रक्रिया में, प्रबंधक को संरचना, कार्यों का विभाजन, ज़िम्मेदारी का स्वरूप और संबंध, ऐसी जिम्मेदारियाँ तथा संबंध प्रस्थापित करने की प्रक्रिया आदि पर निर्णय लेना होता है।

ग्रामीण बैंकिंग

श्री गणेश गड़ाख
स. प्रबन्धक क्षे का नासिक

भारत की लगभग अस्सी प्रतिशत जनता ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है। यदि देश की ग्रामीण जनता के विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा तो बीस प्रतिशत शहरी लोगों की उन्नति के बल पर राष्ट्रीय उन्नति के स्वप्न देखना बेईमानी हैं। कई शताब्दियों से ग्राम निवासी भूख, रोग, अज्ञानता और शोषण से पीड़ित है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गाँववासियों की अवस्था में सुधार के कई प्रयास किए गए है, लेकिन अभी बहुत कुछ कमियाँ हैं, जिसका सामना हमें करना हैं। गाँवों में सुधार की गति में तीव्रता लाने की आवश्यकता है, ताकि वे भी शहरों के समान विकास के आयामों को छू सके और हम अपने सपनों के भारत की ओर उन्मुख हो सकें।

1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण भारतीय अर्थव्यवस्था के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। इससे पहले ग्रामीण क्षेत्र हमारी अर्थव्यवस्था का पूर्णत: उपेक्षित हिस्सा था। गाँवों में आय का मुख्य साधन कृषि है। हमारी राष्ट्रीय आय का लगभग पचास प्रतिशत का योगदान ग्रामीण और अर्द्धग्रामीण इलाकों से प्राप्त होता है।

कृषि पर आधारित उद्योग भी कृषि के उत्पादन पर निर्भर होती है। यह क्षेत्र पिछड़ा और शोषित है। इसके विकास पर ही हमारी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का विकास निर्भर करता है। भारतीय अर्थव्यवस्था द्विआयामी है। इसके दो मुख्य क्षेत्र शहरी और ग्रामीण है। दोनों में कोई संबंध नहीं है। ग्रामीण इलाकों में सहकारी ऋणों की सुविधा नही है। गांव वाले महाजन से कर्ज लेते हैं, जो भोले-भाले लोगों से अधिक ब्याज लेकर उनका शोषण करते हैं।

किसी वित्तीय संस्था से उनका संबंध नहीं होता है। भारतीय रिजर्व बैंक की आर्थिक नीति का प्रभाव साहूकारों पर नहीं पड़ा है। इस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था के दोनों क्षेत्रों की विशेषताएँ अलग-अलग हैं, जिनका आपस में सामंजस्य नहीं के बराबर है।

बैंकिंग प्रणाली को देश के अंदर तक प्रसारित करने के लिए ग्रामीणों को आसान और सरल किश्तों पर ऋण की सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही है। इससे कृषि और ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहन मिला है। इससे हरित क्रांति को भी बढ़ावा मिला है। कृषि उत्पादों में वृद्धि होने से राष्ट्र के विकास को सहयोग प्राप्त हुआ है। कृषि उत्पादन में अवरोध से औद्योगिक विकास को हानि पहुँचती है, जबकि कृषि उत्पादन में विकास से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक सेवा बचत में वृद्धि के लिए उपयोगी है, उस बचत का प्रयोग उत्पादकीय कार्यो में किया जा सकता है। वर्तमान समय में गांवों में बहुत कम बचत होती

है, और उसे भी दबाकर रखने या सोना खरीदने में लगा दिया जाता है। कुछ व्यक्ति उसका व्यय सामाजिक रीति-रिवाजों के पालन में कर देते हैं।

ग्रामीण बैंकों को छोटी-छोटी बचतों को जमा करने की सुविधा प्रदान करनी चाहिए। इस बात का प्रबंध भी किया जाना चाहिए ताकि किसान ऋण का भुगतान कृषि उत्पादों के रूप में कर सकें। बैंकों को प्राकृतिक आपदाओं के दौरान ग्रामीणों को सहायतार्थ ऋण की सुविधाएं देनी चाहिए।

गाँवों की स्थिति में सुधार के लिए बैंकों को गाँव में कार्यरत स्थानीय संस्थाओं की सहायता करनी चाहिए। उन्हें सड़क, दीवार, कुओं के निर्माण और शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए। बैंक गांवों में घरों के निर्माण का जिम्मा भी उठा सकते हैं और उसकी भरपाई किश्तों द्वारा ली जा सकती है। फसलों के बीमे की सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा, महामारी की चपेट में आने से किसानों को हानि न उठानी पड़े।

इसके अतिरिक्त बैंक स्थानीय संस्थाओं की मदद से गांवों में लघु उद्योगों और कुटीर उद्योगों की स्थापना कर सकते हैं। किसान को कृषि का कार्य केवल छ: महीने या मौसम के हिसाब से करना होता है, लघु उद्योग खाली समय में उसके आय का स्रोत बन सकते हैं।

कुटीर उद्योगों के विकास से गाँव में बेरोजगारी की समस्या का बहुत हद तक समाधान किया जा सकता है। इन उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुएँ ग्रामीणों को कम कीमतों पर प्राप्त हो सकेंगी और उन्हें इन वस्तुओं को खरीदने के लिए शहर जाने की आवश्यकता नहीं होगी।

गाँव में बैंक सेवा के विकास की संभावनाएं विस्तृत हैं। बैंकों के माध्यम से ग्रामीण इलाकों का विकास होगा और फलत: देश का विकास होगा। गाँव की आर्थिक उन्नति होगी जिससे आय के असमान वितरण की समस्या सुलझ जाएगी।

बैंकों की गरीबी-रेखा से नीचे के लोगों को भी सुविधा प्राप्त होगी। इससे धनी किसानों और निर्धन किसानों के बीच का अंतर कम होगा। इस प्रकार देश की उन्नति ही नहीं होगी, बल्कि ग्रामीण जनता में आत्मनिर्भरता की भावना का प्रसार होगा।

ग्राहकों के अधिकार

आजकल बैंक में खाता होना आम बात है. हर किसी को किसी न किसी वजह से बैंक में जाना ही पड़ता है. बैंक की सर्विस भी हर दिन बेहतर हो रही है और लोग पहले के मुकाबले जागरूक भी है. इसके बावजूद बैंक में ग्राहकों को कई ऐसे अधिकार मिलते हैं, जिनकी जानकारी आमतौर पर कस्टमर्स को नहीं होती है. ग्राहकों के इन अधिकारों पर खुद बैंकिंग रेग्युलेटर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI) की नजर रहती है.

आइए जानते हैं वे 5 अधिकार क्या हैं?

1. सही व्यवहार का अधिकार

कस्टमर और फाइनेंशियल सर्विसेज देने वालों को हमेशा ग्राहक से शिष्टाचार के साथ पेश आना अनिवार्य है. ग्राहक के साथ लिंग, उम्र, धर्म, जाति और शारीरिक क्षमता आदि के आधार पर सेवाएं देते समय भेदभाव नहीं किया जा सकता है.

2. पारदर्शिता और ईमानदारी का अधिकार

फाइनेंशियल सर्विस देने वाले हर बैंक को यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए कि वह जो भी कॉन्ट्रैक्ट या एग्रीमेंट बनाएं, वह पारदर्शी हो और आम ग्राहक उसे आसानी से समझ सके. प्रोडक्ट की कीमत, उससे जुड़ा रिस्क, नियम और शर्तों का स्पष्ट रूप से खुलासा किया जाना चाहिए.

ग्राहक को गलत बिजनेस या मार्केटिंग प्रेक्टिस का शिकार नहीं बनाया जा सकता है. धमका कर या जबरदस्ती कराया गया कॉन्ट्रैक्ट या फिर गलत तथ्यों के साथ हुआ समझौता मान्य नहीं होगा. कॉन्ट्रैक्ट के दौरान फाइनेंशियल सर्विस प्रोवाइडर ग्राहक को धमकाना-डराना, कठोर उत्पीड़न या शारीरिक नुकसान नहीं पहुंचा सकता है.

3. उपयुक्तता का अधिकार

ग्राहक को दिया गया प्रोडक्ट उसकी जरूरतों के हिसाब से हो, यह सुनिश्चित करना बैंक की जिम्मेदारी है. ग्राहक के आर्थिक हालात और अन्य जानकारी को ध्यान में रखकर ही उसको कोई प्रोडक्ट ऑफर किया जाए.

4. निजता का अधिकार

ग्राहक की निजी जानकारी को तब तक सार्वजनिक नहीं किया जा सकता है जब तक कि उसने इसकी सहमति न दी हो. या फिर कानूनी रूप से वह जरूरी न हो. ग्राहक के पास यह अधिकार है कि वह खुद को ऐसी सभी तरह की कम्युनिकेशन से बचाए रख सकता है जो उसकी निजता के साथ छेड़छाड़ करे.

5. शिकायत निवारण का अधिकार

ग्राहक उसे बेचे गए किसी भी प्रोडक्ट के लिए फाइनेंशियल सर्विस प्रोवाइडर को जिम्मेदार ठहरा सकता है. इस स्थिति में ग्राहक की शिकायत का हल तय समय में बिना किस परेशानी होना चाहिए. थर्ड पार्टी प्रोडक्ट की बिक्री से संबधित सभी समस्याओं का हल भी सर्विस प्रोवाइडर को करना चाहिए. बैंक को अपनी सभी नीतियों जैसे क्षतिपूर्ति, काम में देरी आदि की जानकारी ग्राहक को देनी चाहिए. किसी भी तरह की देरी या अन्य परिस्तिति में ग्राहक के क्या अधिकार या दायित्व है इन सभी की जानकारी ग्राहक को देनी जरूरी है.

महाराष्ट्र की आदिम संस्कृतिः वारली चित्रकारी

श्री संदीप काले
सहायक प्रबन्धक क्षे का नासिक

मानव के जीवन में आदिम काल का बहुत महत्त्व है। भारतीय समाज आदिम काल से चली आ रही संस्कृति से अलग नही हो सकता। मानव विकास के साथ साथ भारतीय संस्कृति में भी बदलाव आते जा रहे है। इसी संस्कृति में कला की अपनी एक खास जगह है। आदिम काल या यू कहे की मानव जब गुफाओं में रहता था तभी से मनोरंजन ने उसके जीवन में प्रवेश कर लिया था। आज बहुत सी पुरातन जगहों, वास्तुओं में भित्तिचित्र इसी की साक्ष देते है। यह भित्तिचित्र आदिम मनुष्यों के दैनंदिन जीवन, उनकी आदते, आदि के बारे में जानकारी देने में सफल साबित हुई है। यह चित्रकारीता आज के समय में उपलब्ध सबसे पुरातन संस्कृति है। जैसे जैसे समय बीतता चला गया है, वैसे वैसे इस कला में भी विकास हुआ है। जैसे दीवार तथा पत्थर की जगह खास कागज ने ले ली है। नैसर्गिक संसाधनो ने बने रंगो की जगह अब रासायनिक रंगो ने ली है। भारत में विभिन्न जातियाँ, समाज एवं धर्म के लोग वास करते है। हर एक की अपनी अलग संस्कृति है। इसलिए हम कहते हैं कि यह संस्कृति विविधता से भरी है और यहाँ विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं। इनमें से कई राज्यों में विभिन्न जातियों और जनजातियों के लोगों ने अपनी संस्कृति को वर्षों तक संरक्षित रखा है। इसी में आदिम काल से चली आ रही चित्रकारीता की कला को महाराष्ट्र की "वारली" जमात ने वर्षों से संरक्षित रखा है। इस कला को पूरे विश्व में "वारली पेंटिंग" के नाम से पहचाना जाता है।

"वारली" यह एक आदिवासी जनजाति है। यह ज्यादातर महाराष्ट्र के नासिक एवं ठाणे जिले में रहते है। इसके साथ ही गुजरात, कर्नाटक राज्य तथा दादरा नगर हवेली के केन्द्र शासित राज्य में भी इनकी संख्या देखी जा सकती है। इसी जनजाति द्वारा आज भी उनकी पुरातन कला "वारली चित्रकला" का उपयोग किया जाता है। आदिम होने के बावजूद वारली समाज द्वारा इस कला को अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है। डॉ. विल्सन के अनुसार, दक्षिण भारत के सात कोंकण में से एक वरलार कोंकण है, इसी वरलार से वारली शब्द लिया गया है। आमतौर पर वारली के घरों के समूह को "पाड़ा" कहा जाता है जिसमें 7-10 झोपड़ियाँ होती है, इसी तरह के 10-15 पाडों के समूह

को खेड़ा बोला जाता है। इनके घर झोपड़ी जैसे होते है। इस झोपड़ी को सटक कर एक "पड़वी" बनी होती है, जिसमें ये पशुपालन करते है। ये जनजाति जंगल क्षेत्र में होने के कारण इनके पास उपजाऊ जमीन बहुत कम होती इसी वारली समुदाय की कला को भारत के साथ साथ अब विदेशों में भी पहचाना जाने लगा है। यह कला वारली जनजाति की प्रमुख विशेषता है। वारली चित्रों में एक चौकोण, एक गोल (वृत्त) और एक त्रिकोण होता इना चित्रों में मुख्य रू से शिकार करना, मछली पकड़ना, खेती, त्योहार, विभिन्न नृत्य जानवर एवं पेड़ों के चित्र शामिल होते है।

इन चित्रों में मुख्य रूप से शिकार, मछली पकड़ने, खेती, त्योहारों, विभिन्न नृत्यों, जानवरों और पेड़ों के दृश्य शामिल हैं। बहुत सी बार वारली चित्रों में में एक आदमी को "तरपा" नामक एक पारंपरिक वाद्य यंत्र बजाते हुए दिखाया गया है, जो नृत्य करने वाले लोगों के बीच में खड़ा होता है और पुरुष और महिलाएं उसके चारों और एक घेरा बनाकर नृत्य करते हुए डिकाए जाते है।

वारली समाज के घर की दीवारें बनाने के लिए पेड़ की शाखाएँ, मिट्टी और गोबर के मिश्रण का उपयोग किया जाता हैं। इसे "कुड़" कहा जाता है। झोपड़ी की इनही दीवारों पर अक्सर विविध " विधी के चित्र" बनाए जाते है। वारली चित्र सामान्यतः लाल रंग के गेरू से रंगी एक दीवार पर बने सफेद रंग के चित्र होते है। इन चित्रों में इस्तेमाल किए जाने वाला सफ़ेद रंग वास्तविकता में वारली लोगों द्वारा बनाया गया चावल के आटे और गोंद का गाढ़ा मिश्रण होता है। चित्र बनाने के लिए उपयोग में लाये जाने वाला ब्रश बांस की लकड़ी के एक सिरे को को दाँतो से चबाकर बनाया जाता है।

यह एक बहुत ही प्रसिद्ध और लोकप्रिय कला है। वारली समुदाय द्वारा भित्ति चित्र केवल शादियों जैसे महत्वपूर्ण अवसरों में ही बनाएँ जाते है। वर्तमान समय में यह खूबसूरत वारली पेंटींग घरों की दीवारों पर , फूलदानियाँ, बेडशीट, फैशनेबल कपड़े तथा बैगों पर भी छपी हुई पाई जाती है। यह कला वारली समुदाय के लोगों के रगों में बस गई है। वारली चित्रों में "चौक" को विशेष महत्व है। इसे चौक में "लग्न चौक" और "देवचौक" स्थापित होता है। हर वारली परिवार में यह चौक पाया जाता है। चौक लगाना एक धार्मिक अनुष्ठान होता है। शादी ब्याह के समय एक से दो दिन के लिए यह

चौक बनाया जाता है। यहा पर "चौक बनाना" की जगह "चौक लिखना" इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। परिवार की बड़ी स्यहागन महिला घर की दीवार पर पहली रेखा खींचती है जिसे "देवरेखा" कहा जाता है। उसके उपरांत दूल्हा-दुल्हन के नाम से एक रेखा खींची जाती है। इस में पहली चार रेखाएं चार दिशाओं को दर्शाती है। चौक को लिखते समय पारंपारिक लोकगीत भी

गाये जाते है। फिर पति-पत्नी के नाम से एक रेखा खींची जाती है। पहली चार पंक्तियाँ चारों दिशाओं को दर्शाती हैं। चौक के केंद्र स्थान में "पालघाट" देवी होती है। देवी की छवि विविध नक्काशी से घिरी हुई होती है। इस नक्काशी में दूल्हे के सेहरे की कुछ चीजें चित्रित की जाती है। इसमे पालघाट देवी के पास चाँद, सूरज, तूरे, डिबिया, फेटे की झालर, चेन तथा डफ आदि को चौक के आंतरिक भाग में स्थान होता है। चंद्र, सूर्य को देवताओं का रूप माना जाता है । मनुष्य के उत्तरोत्तर विकास के रूप में लीसन (सीढ़ी) को भी चौक में स्थान प्राप्त होता है।

"लग्न चौक" के पास ही 'देव चौक' बनाया जाता है। इस चौक में घोड़े पर सवार पाँच सिरों वाला भगवान बनाया

जाता है। उनके साथ नारन देव, हिरवा देव और हिमाया देव भी बनाए जाते हैं। इसमे हरा (हिरवा) देवता मोर होता है। मोर का पंख इस चौक में बनाया जाता है। हिमाय देव वारली समाज में इस्तेमाल किए जाने वाला घागली नाम का तंतुवाद्य होता है। दोनों चौकों के बाहरी क्षेत्र में बहुत सारी चीजे दर्शाई जाती इसमें बाशिंग(सेहरा), गजरा, विवाह आयोजक, ताड़ी नाम का पेय ढ़ोने वाले लोग जिनहे भारकरी कहा जाता है, इन्सानों के वंशज के रूप में बंदर तथा बाराती इसमें शामील होते हैं। "तारपा" वाद्य आदिवासी समाज का एक अभिन्न अंग है। वारली चित्रों में तारपा के चित्र अधिक संख्या में पाये जाते हैं। यह 'तारपा" नृत्य का चित्र होता है जिसका घेरा अनन्य होता हैं।

हैं इस नृत्य में घेरा विलोभनीय होता है। इन चित्रों में नृत्य की लय, ध्वनि, प्रमाणबद्धता और शृंखला को चित्रित किया जाता है। इसमें नृत्य में खास बात यह होती है कि इसमें सभी शामिल होते है, इस कारण इन चित्रों से यह स्पष्ट होता है कि इस नृत्य को देखने के लिए प्रषेक ना के बराबर होते। इन चित्रों के साथ ही कावडनाच और गवरी नाच के चित्र भी बनाए हुए देखे जा सकते हैं।

कुछ वारली चित्रकारों ने वारली चित्रों के माध्यम से उनकी लोककथाओं को चित्रकथा के रूप में चित्रित किया हैं। यह कहानियाँ आदिवासी समाज में परंपरागत रूप से काही और सुनी जा रही है। जब हम इनकी बेलकड़ा की लोक कथाएँ, सोनालू बाई की कथा, मुगली और कोल्या, उड़ने वाला वरु, महाप्रलय की कहानियों के बारे में

जानकारी प्राप्त कर लेंगे तभी इनकी चित्रकाथाओं का अर्थ समझ सकते हैं और इन चित्रों का आस्वाद ले सकते हैं। छोटे आकार के चित्र वारली चित्रों की प्रमुख विशेषता है। वास्तविक रूप से अगर इन चित्रों का आकारा बड़ा हो जाएगा तो यूना चित्रों की सजीवता नष्ट हो जाएगी। वारली चित्रकारों ने सभी भाव चौकोन, त्रिभुज, वर्तुल के आकार में बनाए हैं। इयानके चित्रों में दर्शाया गया एक बैल का छोटा होता है, जबकि एक बिच्छू का आकार बड़ा दिखाया जाता है। एक छोटेसे पैड के चित्र पर दिखाया गया पक्षी आकार में पेड़ से बड़ा हो सकता है। लेकिन यह विरोधाभास इन चित्रों की सुंदरता को प्रभावित नहीं करता है। इन चित्रों में मुख्य रूप रेखाओं का उपयोग किया जाता हैं। इनके चित्रों में सीधी, सर्पिल रेखाएँ पाई जाती हैं। पेड़ की शाखाओं को दर्शाने के लिए सीधी रेखाएँ, पानी दर्शाने के लिए छोटी रेखाएँ, लंबी रेखाएँ घास दर्शाने के लिए उपयोग की जाती हैं। यह क्षकिरणता इन चित्रों की विशेषता है और मानव जीवन की पारदर्शिता का संकेत है। झोंपड़ी में झूले में सोता हुआ बालक, झोंपड़ी के माले का एक भाग, माले पर अनेक वस्तुएँ, विशेषकर कणगी, बिल्ली और जमीन के नीचे रहने वाले पशुओं का जीवन इन चित्रों के चित्रों के माध्यम दर्शाएँ जाते है। शिकार के चित्रों में छुपकर बैठे प्राणी तथा पानी के अंदर मछलियाँ भी देखी जा सकती है। क्रिया दर्शाते चित्र उनके हर समय कार्यमग्नता का संकेत हो सकते है। इन चित्रों में लोगों के समुदाय को दर्शाया जाता है। पूरुषों को इन चित्रों में ताड़ के पेड़ से "ताड़ी" निकालने वाली व्यक्ति, मछली पकड़ते हुए व्यक्ति, बैलगाड़ी चलाते हुए अथवा हल खींचते हुए बैल, बैलों को चराते हुए, मचान से खेती की देखभाल कराते हुए, बांस लगाते अथवा काटते हुए, खरपतवार निकालते हुए चित्रित किया जाता हैं। जबकि महिलाएं पानी भरती, बच्चों की देखभाल करती, आटा पीसती, कपड़े धोती, चावल फुनते हुए दिखाई जाती हैं। यह इस समाज में आदिम काल से निश्चित किया गया श्रम विभाजन को दर्शाताहै। इसके बावजूद पुरूष और महिलाएं बहुत से वारली चित्रों एक साथ "तारपा" नृत्य करते हुए, मछली पकड़ते हुए चित्रों में दिखाये जाते है।

वारली चित्रकला में प्रकृति और पर्यावरण का अपना एक समग्र स्थान है। खेत में खेती करते समय के चित्रों में मछली, मेंढक आदी भी दिखाये जाते है। अनाज को साफ करते हुए आसपास मुर्गीयां तथा चिड़ियाँ भी दिखाते है। आकाश में मुक्त विहार करने वाले पक्षी भी होते है। उनके कृषि क्षेत्र के विकास में उसके द्वारा पालन किए गए पशु, देवता का स्वरूप माना गया बाघ आदि प्राणी तथा मकड़ी के जाले की रेखीवता भी इन वारली चित्रों में देखने मिलती है।

वारली पेंटिंग महाराष्ट्र में विशेष रूप से पालघर जिले के तलासरी, दहानू, पालघर, वसई, वाडा, विक्रमगढ़, जव्हार, मोखाड़ा और महाराष्ट्र और गुजरात की सीमा क्षेत्र और दादरा नगर हवेली जैसे क्षेत्रों में पाई जाती है। यह कला नासिक और धुले के क्षेत्रों में भी सामान्यतः देखी जाती है। हालांकि, दहानु और तलासरी क्षेत्र को इस पेंटिंग का केंद्र माना जाता है। इस समुदाय में वारली समुदाय के साथ एक अन्य समुदाय महादेव कोली भी इस कला का उपयोग करते हैं। कुल मिलाकर यह कला महाराष्ट्र की संस्कृति और पहचान का अभिन्न अंग है। वारली पेंटिंग वारली समाज की संस्कृति का आईना है। "कूड़ा" यानी दीवार पर बनाए गए चित्र आज भी जागतिक स्तर पर प्रसिद्ध है।

वारली संस्कृति संग्रहालय नई दिल्ली के आनंदग्राम में स्थित है। वारली चित्रकार जिव्या सोमा म्हसे ने वारली पेंटिंग को दुनिया के सामने लाने में मदद की। जीवा सोमा म्हसे को इस कला के लिए भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया है। पद्मश्री जीव सोमा म्हसे और उनके जैसे कई अन्य प्रतिभाशाली कलाकारों ने इस वारली चित्रकला के विकास में योगदान दिया है।

तारपा वाद्य

पद्मश्री जीवा सोमा म्हसे

घांगोली तन्तु वाद्य

तारपा नृत्य का वारली चित्र

लग्न चौक

देव चौक

चित्र दिर्घा

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस : 21 जून 2022

दिनांक 21 जून 2022 को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक द्वारा स्टाफ सदस्यों हेतु योग दिवस का आयोजन किया गया।

क्रेडीट आउटरीच शिविर : दिनांक 13 जून, 2022

नासिक क्षेत्र द्वारा दिनांक 13 जून 2022 को नंदुरबार जिले के शहादा में क्रेडीट आउटरीच शिविर का आयोजन किया गया।

वृक्षारोपन कार्यक्रम : दिनांक 13 जून, 2022

नासिक क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 13 जून 2022 को शहादा में वृक्षारोपन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव : विभाजन विभीषिका दिवस : 14.08.2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव : ज्ञान गंगा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता : 16 जून 2022

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय नासिक द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 16.07.2022 को माड़सांगवी स्थित मा. वसंत दादा पाटील हाईस्कूल के विद्यार्थियों हेतु ज्ञान गंगा प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिता के विजेताओं को 15.08.2022 के स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्रदान किए गए।

विद्यार्थी सम्मान – सत्कार कार्यक्रम

सेंट क्रान्ति : मोबाइल वैन उपक्रम

ग्राहक आउटरिच कार्यक्रम : 08 जून, 2022

ने सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई मापदंड से बाहर किया गया।

हिन्दी दिवस : 14 सितंबर, 2022

ग्राहक संगोष्ठी : 24.09.2022

हिन्दी माह मुख्य एवं पुरस्कार वितरण समारोह : दिनांक 14.10.2022

क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक द्वारा दिनांक 14.09.2022 से 14.10.2022 तक हिन्दी माह मनाया गया। दिनांक 14.10.2022 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में हिन्दी माह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं एवं अखिल भारतीय हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता के प्रथम चरण के विजेताओं को नासिक क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री रंजीत सिंह जी के करकमलों से प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किये गये।

"सेन्ट क्रान्ती" : ऋण शिविर

दिनांक 01 अगस्त 2022 से 31 अगस्त 2022 के दौरान चलाएं गए "सेन्ट क्रान्ती" अभियान के उपलक्ष्य में दिनांक 22/08/2022 को माननीय श्री राजेश कुमार, महाप्रबंधक, केंद्रीय कार्यालय की उपस्थिति में "ऋण शिविर" का आयोजन किया गया।

बैंक प्रबंधन

श्री संदीप गायकवाड
प्रधान खजांची- महिरावनी शाखा

बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् यदि देखा जाए तो बैंकों में प्रबन्ध के मूलभूत सिद्धांतों एवं संरचना में व्यापक परिवर्तन दिखाई देते हैं। यद्यपि विश्व आर्थिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप बैंकिंग संरचना में भी बदलाव आया है साथ ही बैंकों के सिद्धांतों में भी व्यापक परिवर्तन दिखाई देता है।

इकाई बैंकिंग, शाखा बैंकिंग, श्रृंखला बैंकिंग तथा वर्तमान में इंटरनेट बैंकिंग रूपी संरचनात्मक परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। बैंकिंग सिद्धांतों को ही लिया जाए तो आरम्भ में सुरक्षा का सिद्धांत अतिमहत्वपूर्ण होता था। वर्तमान में लाभदायकता के सिद्धांत को अधिक महत्व दिया जाने लगा है, क्योंकि आधुनिक परिवेश में मानवीय आवश्यकताएँ भिन्न रूप लिये हुए हैं।

उदारीकृत एवं वैश्वीकृत व्यापार व्यवस्था के फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति की वित्तीय आवश्यकताएँ विविधतापूर्ण होती जा रही है। इस विविध रूपी वित्तीय आवश्यकता को पूरा करने हेतु बैंकिंग व्यवस्था में भी नवीनतम परिवर्तन किये जा रहे हैं। नई-नई सेवायें प्रदान करने वाली नवोन्मेषी बैंकिंग संस्थाओं का तेजी से विस्तार हो रहा है।

एक ओर जहाँ बैंक औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे है वहीं आम उपभोक्ता वर्ग बैंक का सुदृढ़ एवं परिपक्व ग्राहक सिद्ध हो रहा है। बैंकिंग संस्थाएं समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए बैंकिंग सुविधाएँ पहुंचा रही हैं।

उद्योगपति, पेशेवर व्यक्ति, दिहाडी मजदूर, नौकरी पेशा वर्ग इत्यादि कोई भी वर्ग ऐसा नहीं है जो बैंकिंग व्यवस्था से प्रत्यक्षतः सम्बन्ध नहीं रखता हो। अतः बैंकों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने परम्परागत बैंकिंग सिद्धांतों में परिवर्तन कर बहुआयामी बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार करे।

बैंक का एक महत्वपूर्ण कार्य अपनी पूँजी का विनियोग करके लाभ प्राप्त करना होता है। विभिन्न साधनों से एकत्रित पूँजी को बैंक विभिन्न प्रकार के विनियोगों में लगाता है और उनसे आय प्राप्त करता है।

बैंक की सफलता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि वह किस पूँजी (Capital) का विनियोग करता है तथा उसे किस प्रकार की प्रतिभूतियों में विनियोजित करता है। सफल विनियोग नीति का निर्धारण करने के लिए बैंक अधिकारियों में दूरदर्शिता, अनुभव या परिपक्व निर्णय लेने के गुण होने चाहिए।

सामान्यतः बैंक को उचित विनियोग करने के लिए बैंकों के प्रबन्ध के निम्नांकित मूलभूत सिद्धांतों का पालन करना चाहिए:

(1) कोषों की तरलता:

सर्वप्रथम बैंक को अपने विनियोगों को करते समय तरलता का ध्यान रखना चाहिए। तरलता से अभिप्राय बैंक की माँग करने पर नकदी का भुगतान करने की क्षमता से होता है। किसी भी बैंक के लिए उसके कोषों की तरलता अत्यन्त आवश्यक है।

बैंक का व्यापार विश्वास पर चलता है और जनता को बैंक पर विश्वास तब तक होता है जब तक कि वह माँग किए जाने पर नकदी भुगतान कर सकता है। इसलिए बैंक के पास प्रत्येक चैक का भुगतान करने के लिए पर्याप्त मात्रा में नकद मुद्रा होनी चाहिए।

इसके लिए आवश्यक है कि बैंक के विनियोग 'बिक्री योग्य' हों अर्थात् उन्हें आवश्यकता पड़ने पर आसानी से तथा बिना किसी नुकसान के नकद मुद्रा में बदला जा सके। इसके लिए बैंक को ऐसी सम्पत्तियां रखनी चाहिए जिन्हें शीध्र ही नकदी में बदला जा सके। इस दृष्टि से बैंक के लिए अल्प अवधि के ऋण देना उपयुक्त होता है।

यदि बैंक अतरल सम्पत्तियों (जैसे भू-संपत्ति अबिक्री-साध्य प्रतिभूतियों अथवा दीर्घकालीन औद्योगिक तथा कृषि ऋणों) में अपना धन विनियोजत करता है तो संपत्तियों की तरलता समर्त हो जाती है। इस संबंध में श्री टैनन का कथन सामयिक है कि "एक सच्चा बैंकर वह है जो विनिमय बिल तथा बन्धक के अन्तर को भली-भाँति समझता है।"

विनिमय बिल एक अल्पकालीन साख-पत्र होता है, जिसे आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त भुनाया जा सकता है, किन्तु बन्धक एक बडी ही गैर तरल सम्पत्ति है। यह सम्भव है कि बैंक के पास पर्याप्त गैर तरल संपत्ति रखते हुए भी, यदि वह अपनी नकदी संबंधी मांगो में तत्काल पूरा करने में असफल रहे, उसका दिवाला निकल जाय।

अतः बैंक को अपने कोष सरकारी तथा प्रथम श्रेणी की प्रतिभूतियों तथा उत्तम अंशों और ऋण पत्रों में विनियोग करने चाहिए। स्टीड के शब्दों में – "बैंक को केवल कार्यशील पूंजी की अनुपूर्ति के लिए ऋण देना चाहिए न कि अचल या स्थायी पूँजी बनाने के लिए।"

(2) जोखिम की विविधता:

ग्रह भी बहुत आवश्यक है कि अपना सब या अधिकांश धन एक ही प्रकार के ऋणों, प्रतिभूतियों, व्यवसाय अथवा विनियोग में न लगायें, बल्कि उसस इस प्रकार प्रयोग करें ताकि एक व्यवसाय में मन्दी आने अथवा एक ही प्रकार की प्रतिभूतियों की तरलता या कीमतें घट जाने का बैंक साख पर बुरा प्रभाव न पड़े।

यह अधिक उपयुक्त है कि बैंक कुछ थोड़े से उद्योगों अथवा व्यापारियों को बड़े- बड़े ऋण देने के स्थान पर छोटे-छोटे अथवा मध्यम प्रकार के ऋण बहुत से उद्योगों और व्यक्तियों को दे ताकि किसी समय में कुछ व्यक्तियों द्वारा भुगतान न करने से उत्पन्न जोखिम कम हो जाये।

(3) उत्पादकता अथवा लाभदायकता:

प्रत्येक बैंक का उद्देश्य लाभ कमाना है। वह ऋण देने का निर्णय इस बात को देखकर करती है कि उसे इससे कितना लाभ प्राप्त होगा। किसी विनियोग अथवा आदेय की उत्पादकता जितनी ही अधिक होगी उसे उतना ही अधिक पसंद किया जायेगा।

बैंक स्वयं ऋण लेकर विनियोग करती है। यदि ऋण प्राप्त करने और ऋण प्रदान करने की ब्याज की दर में अधिक अन्तर है, तो ऋण देना अधिक लाभदायक होगा। बिना समुचित लाभ की आशा के विनियोग का प्रश्न ही नहीं उठता परन्तु बैंक को अपनी सुरक्षा को भी ध्यान रखना चाहिए।

(4) धन की सुरक्षा:

बैंक की अग्रिम तथा विनियोग नीति के सम्बन्ध में धन की सुरक्षा सबसे पहली आवश्यकता है, क्योंकि अधिक लाभ कमाने के लिए सुरक्षा पर ध्यान न देना घातक हो सकता है। इस कारण कहा जाता है कि बैंक को बिना उपयुक्त प्रतिभूति के ऋण नहीं देना चाहिये।

बहुत बार अन्य बैंकों की प्रतियोगिता के कारण बैंक को कम विश्वसनीय प्रतिभूतियों पर ऋण देना पड़ जाता है। ऐसी दशा में बैंक के प्रबन्धक को बहुत सोच-विचार पर कम करना चाहिए। यदि व्यवसाय में लोच बनाए रखने के लिए कम सुरक्षित विनियोग आवश्यक हो तो उन्हें सावधानी से चुनना चाहिए।

विनियोग की सुरक्षा के लिए निम्न बातों का ध्यान बैंक को रखना चाहिए:

(i) अपना समस्त कोष किसी एक ही व्यक्ति या उद्योग को उधार न दें,

(ii) ग्राहक की जमानत के बाजार मूल्य की पूर्ण जाँच कर लें,

(iii) अल्पकाल तथा अस्थायी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऋण दें,

(iv) सस्ती साख नीति न अपनायें, क्योंकि इसके कारण ऋणी अपव्ययी बन जाते हैं और

(v) ऋणी के आचरण की भली-भाँति जाँच करा लें।

(5) प्रतिभूतियों की बिक्री-साध्यता:

बैंक को सरकारी प्रतिभूतियों, प्रथम श्रेणी के बिलों, अच्छी कम्पनियों के अंशों व ऋण पत्रों तथा माल आदि के आधार पर ही ऋण देने चाहिए क्योंकि इनकी बिक्री साध्यता अधिक होती है और बैंक जब चाहे इन्हें बेचकर धन प्राप्त कर सकता है।

इसके विपरीत अचल संपत्ति में किया गया विनियोग तरल नहीं होता अर्थात् अचल संपत्तियों में लगाया गया धन सरलता से नहीं निकाल सकता। अधिकांश बैंक अचल संपत्ति में धन विनियोजन के कारण ही कठिनाई में फंसते हैं और कभी-कभी असफल हो जाते हैं।

(6) प्रयोग की उद्देश्यपूर्णता का सिद्धान्त:

बैंक को अपनी निधियों का प्रयोग इस प्रकार करना चाहिए जिससे उनका व्यर्थ में अपव्यय न किया जा सके तथा जिनके प्रयोग से समुदाय, समाज अथवा देश को किसी भी प्रकार की हानि न हो।

अन्य शब्दों में बैंक को अनुत्पादक, अनावश्यक सामाजिक रीतियों का पालन करने के लिए, असामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ऋण नहीं देने चाहिए। इस दृष्टि से बैंक को

सट्टा व्यापार के लिए ऋण नहीं देना चाहिए, क्योंकि ऐसे ऋणों से बैंक की पूँजी जोखिम में पड़ सकती है।

(7) हस्तान्तरणीयता का सिद्धान्त:

बैंक को अपना धन ऐसी सम्पत्तियों में लगाना चाहिए जिन्हें बिना अधिक कानूनी कार्यवाहियाँ सम्पन्न किये ही सरलतापूर्वक तथा शीघ्र ही दूसरे पक्ष को हस्तान्तरित किया जा सके। इस दृष्टि से बैंक को अचल सम्पत्तियों में कम विनियोग करना चाहिए।

(8) विनियोगों तथा उनके मूल्यों में स्थिरता का सिद्धान्त:

बैंक को अपनी पूंजी ऐसी सम्पत्तियों में लगानी चाहिए जो शीघ्र नष्ट या खराब न हो जाती हो तथा जिनके मूल्य में अधिक अस्थिरता न हो क्योंकि ऐसा न करने से बैंक को हानि उठानी पड़ेगी। अतः बैंक को शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं, सट्टे पर लगायी जाने वाली प्रतिभूतियों, आदि में अपनी अधिक पूँजी नहीं लगानी चाहिए।

(9) राष्ट्रीय हित का सिद्धान्त:

बैंकों को चाहिए कि वे केवल अपने ही आर्थिक हित की दृष्टि से कार्य न करें वरन् समाज और देश के व्यापारिक हितों को भी ध्यान में रखें, उन्हें अपनी पूँजी का विनियोग उन क्षेत्रों में भी करना चाहिए जो कि उनके लिए कम लाभदायक या कम सुरक्षित हो, किन्तु राष्ट्र के लिए अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है जैसे- कृषि, लघु उद्योग, यातायात व आवास आदि।

(10) विनियोग के भविष्य को देखने के सिद्धान्त:

बैंक को अपने धन का विनियोग करते समय सम्बन्धित व्यक्तियों, संस्थाओं, व्यापारों तथा उद्योगों की वर्तमान स्थिति के औचित्य पर ध्यान देने के साथ-साथ इनके भविष्य पर भी पूर्ण विचार कर लेना चाहिए। यदि किसी विनियोग की वर्तमान स्थिति लाभदायक तथा आकर्षक हो, परन्तु भविष्य अधिक उज्ज्वल न हो तो बैंक को उसमें अपना धन नहीं लगाना चाहिए।

(11) सरकारी नीतियों से सामंजस्य रखने का सिद्धान्त:

बैंकों को चाहिए कि अपने कोषों का विनियोग करने में सरकार की नीतियों का भी ध्यान रखे। आजकल भारत की कल्याणकारी सरकार कृषि व लघु उद्योगों के अधिक मात्रा में साख उपलब्ध कराना चाहती है। अतः बैंक को भी इन क्षेत्रों के प्रति उदार नीति अपनानी चाहिए।

श्रीखंड

श्रीमती श्रेयसी उगांवकर
स. प्रबन्धक

श्रीखंड एक भारतीय मिठाई है जो दही के मस्के मैं चीनी और ड्राई फ्रूट्स मिला कर बनता है. दही का मस्का बनाने के लिए दही को किसी छन्नी पर रक्खा जाता है या फिर मलमल के कपडे मैं बांध कर लटकाया जाता है जिससे उसका अतिरिक्त पानी निकल जाय. यह मिठाई गर्मियों के मौसम में खूब पसंद की जाती है. गुजरात में ड्राई फ्रूट्स या फिर ताजे फल डालकर बनाया गया श्रीखंड को मट्ठो भी कहा जाता है और ये शादियों मैं और ख़ास अवसरों पे बनता है. आप श्रीखंड रेसिपी को मैंगो या स्ट्रोबेरी के साथ भी बना सकते हो . ये मिठाई भारत के महाराष्ट्र और गुजरात आदि राज्यों में खाना खाने के बाद बहुत पसंद की जाती है. इस स्वादिष्ट व्यंजन का आनंद आप अपने मनचाहे पकवान के साथ उठाये या फिर ऐसे ही परोस सकते है. श्रीखंड पूड़ी लोगों द्वारा बहुत पसंद की जाती है.

सामग्री:

दही बनाने के लिए:
५०० मि. ली. फुल फैट दूध
१ बड़ा चमच दही

श्रीखंड बनाने के लिए:
५०० ग्राम दही, १ बड़ा चमच दूध, ८-१० कतरन केसर की, १/३ कप पिसी हुई चीनी, १/३ कप मेवा (ड्राई फ्रूट्स) (बादाम, काजू और पिस्ता की कतरन), १/४ छोटी चम्मच इलाइची पाउडर (वैकल्पिक), परोसने के लिए: २५० ग्राम श्रीखंड बनता है
तैयारी का समय: १० मिनट, पकाने का समय: २ मिनट, कुल समय: १२ मिनट, * १ कप = २३७ मि. ली.

विधि:

दही बनाने के लिए:

1. पहले से ही उबला और ठंडा किया हुआ दूध ले ले या फिर दूध उबाल कर उसे कोषा गरम तापमान पे ले आये. हमें कोषा गरम दूध चाहिए.
2. कांच या सिरेमिक या मिट्टी का बर्तन ले.
3. उसमे दही अच्छे से फैला ले.
4. कोषा गरम दूध उसमें डालें और अच्छे से मिला ले.
5. बर्तन को ढक कर किसी अँधेरी जगह पर ४-८ घंटे के लिए रख दे जब तक की दही जम जाए.
6. आगे की कार्रवाई करने से पहले दही को फ्रिज में ३-४ घंटे के लिए रख दे.

श्रीखंड बनाने के लिए:

1. पतली जाली वाली छन्नी ले या फिर मलमल का कपडा ले कर किसी उंडे बर्तन पे रखे.
2. दही को छन्नी पे डाले.
3. छन्नी को दंख कर बर्तन सहित फ्रिज में ६-८ घंटे के लिए रख दे.
4. दही का पानी बर्तन में जमा हो जायेगा.
5. केसर का घोल बनाने के लिए गरम दूध मैं केसर डाल कर मिला ले. उसे ठंडा होने दे और फिर उसे अगली कारवाही तक फ्रिज मैं रख दे.
6. दही का मस्का एक बर्तन में निकाल ले.
7. उसमें पिसी हुई चीनी और केसर का घोल अच्छे से मिला ले.
8. अब इसमें मेवा और इलाइची पाउडर डाले.
9. सब कुछ अच्छे से मिलाकर श्रीखंड को फ्रिज में १-२ घंटे के लिए ठंडा होने दे.
10. राजभोग श्रीखंड खाने के लिए तैयार है.

प्रेरक कहानी : पानी का ग्लास

एक शिक्षक ने अपने हाथ में पानी से भरा एक ग्लास पकड़ते हुए कक्षा शुरू की. उन्होंने ग्लास को ऊपर उठा कर सभी छात्रों को दिखाया और पूछा, "आपके हिसाब से ग्लास का वज़न कितना होगा?

'50 ग्राम....100 ग्राम ...125 ग्राम'...छात्रों ने उत्तर दिया.

"जब तक मैं इसका वज़न ना कर लूँ मुझे इसका सही वज़न कोई नहीं बता सकता". प्रोफ़ेसर ने कहा. " पर मेरा सवाल है:

यदि मैं इस ग्लास को थोड़ी देर तक इसी तरह उठा कर पकडे रहूँ तो क्या होगा ?"

'कुछ नहीं' ...छात्रों पटाक से जवाब दिया.

'अच्छा, अगर मैं इसे मैं इसी तरह एक घंटे तक उठाये रहूँ तो क्या होगा ?" , प्रोफ़ेसर ने फिर से पूछा.

'आपका हाथ दर्द होने लगेगा', एक छात्र ने उत्तर दिया.

"तुम सही हो, अच्छा अगर मैं इसे इसी तरह पूरे दिन उठाये रहूँ तो क्या होगा?"

"आपका हाथ सुन्न हो सकता है, आपकी मांसपेशिशियों में भारी तनाव आ सकता है और संभावता आपको अस्पताल जाना पड़ सकता है"....किसी छात्र ने कहा, और बाकी सभी हंस पड़े...

"बहुत अच्छा , पर क्या इस दौरान ग्लास का वज़न बदला?" प्रोफ़ेसर ने पूछा.

छात्रों ने उत्तर दिया .."नहीं"

"तब भला हाथ में दर्द और मांशपेशियों में तनाव क्यों आया?"

छात्र अचरज में पड़ गए.

फिर प्रोफ़ेसर ने पूछा " अब दर्द से निजात पाने के लिए मैं क्या करूँ?"

"ग्लास को नीचे रख दीजिये! एक छात्र ने कहा.

"बिलकुल सही!" प्रोफ़ेसर ने कहा.

जीवन की समस्याएँ भी कुछ इसी तरह होती हैं. इन्हें कुछ देर तक अपने दिमाग में रखिये और लगेगा की सब कुछ ठीक है.उनके बारे में अधिक देर तक सोचिये और आपको पीड़ा होने लगेगी.और इन्हें और भी देर तक अपने दिमाग में रखिये और ये आपको निष्क्रिय करने लगेंगी. और आप कुछ नहीं कर पायेंगे.

अपने जीवन में आने वाली चुनातियों और समस्याओं के बारे में सोचना ज़रूरी है, पर उससे भी ज्यादा ज़रूरी है दिन के अंत में सोने जाने से पहले उन्हें नीचे रखना. इस तरह से आप तनावग्रस्त नहीं रहेंगे, आप हर रोज़ मजबूती और ताजगी के साथ उठेंगे और सामने आने वाली किसी भी चुनौती का सामना कर सकेंगे.

हंसी की फुहार

टीचर : मैं दो वाक्य दूंगा उसमें आपको अंतर बताना है.
पहला वाक्य- उसने बर्तन धोए.
दूसरा वाक्य- उसे बर्तन धोने पड़े.
पप्पू : पहले वाक्य में कर्ता अविवाहित है. और दूसरे वाक्य में कर्ता विवाहित है

पिता : अगर इस बार तुम इम्तिहान मे फैल हुए तो, मुझे पापा मत कहना.
इम्तिहान के बाद,
पिता : तुम्हारा रिजल्ट क्या आया?
बेटा: दिमाग का दही मत कर
बाबूलाल तु बाप कहलाने का हक खो चूका है.

एक सरकारी दफ्तर के
बोर्ड पार लिखा था,
कृपया शोर ना करे.
किसी ने उसके नीचे
लिख दिया,
“वरना हम जाग जायेंगे..”

पति : अल्लाह ने तुम्हें 2 आँखे दी हैं,
चावल से पत्थर नही निकाल सकती?
पत्नी : अल्लाह ने तुम्हे 32 दांत दिए है,
2-4 पत्थर नही चबा सकते?

थप्पड मारने पर नाराज वाईफ
से हसबंड बोला:
“आदमी उसी को मारता है जिससे वो प्यार करता है.”
वाईफ ने हसबंड को 2 थप्पड मारे और बोली “आप क्या समझते है मै आपसे प्यार नही करती”

पत्नी: डॉक्टर साहब..
मेरे पती को रात मे बडबडाने की आदत है,
कोई उपाय बताये?
डॉक्टर: आप उन्हें दिन मे
बोलने का मौका दिया करे..

इस मतलबी दुनिया में,
एक पान वाला ही है,
जो पूछ कर चुना लगाता है !

एलकेजी के बच्चे के पेपर मे 0 आया.
गुस्से से पिता: यह क्या है?
बच्चा: पिताजी, मास्टरजी के पास स्टार खत्म हो हो गए थे
इसलिये उन्होने चाँद दे दिया.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

Azadi Ka Amrit Mahotsav

ख़ुशियों का नया एड्रेस.
Happiness has a new address.

- कम ब्याज दर
- चुकौती अवधि:
  75 वर्ष की आयु तक
- पूर्व भुगतान पर कोई प्रभार नहीं

Cent HOME LOAN

- Low rate of interest
- Repayment:
  Up to 75 years of age
- No prepayment charges

Give a Missed Call on 922 390 1111

www.centralbankofindia.co.in | हमें यहां फॉलो करें: CentralBankofIndia | टोल फ्री नंबर: 1800 22 1911

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

Azadi Ka Amrit Mahotsav

दीजिए अपने सपनों को रफ़्तार.
Set your dreams in motion.

- कम ब्याज दर
- त्वरित प्रसंस्करण
- कोई पूर्व-भुगतान प्रभार नहीं

Cent VEHICLE Loan

- Low rate of interest
- Quick processing
- No pre-payment charges

Give a Missed Call on 922 390 1111

www.centralbankofindia.co.in | हमें यहां फॉलो करें: CentralBankofIndia | टोल फ्री नंबर: 1800 22 1911

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911